

राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिंदी विभाग

विभाग के बारे में:

भाषा केवल अभिव्यक्ति एवं संपर्क का माध्यम ही नहीं है अपितु वह सामाजिक सोच, सामासिक संस्कृति और सामूहिक मानसिकता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत जैसे एक बहुभाषी और बहु-सांस्कृतिक देश की राजभाषा एवं संपर्क भाषा होने के साथ-साथ हिन्दी विभिन्न भाषा-भाषी समाजों और संस्कृतियों के बीच अंतः संवाद का माध्यम भी है। राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय का हिन्दी विभाग शैक्षिक एवं सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ उपेक्षित समूहों को केन्द्र में लाने की प्रक्रिया में हिन्दी भाषा एवं साहित्य की भूमिका को महत्वपूर्ण मानता है। हिन्दी विभाग निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इस विभाग की स्थापना अकादमिक सत्र-2011 में की गयी जिसमें स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. पाठ्यक्रमों को शामिल किया गया है। विभाग का पाठ्यक्रम साहित्य, प्रयोजनमूलक हिन्दी और भाषाविज्ञान के एकीकृत अध्ययन पर केन्द्रित है जो छात्रों को रोजगार के अवसर प्रदान करने में पूर्णतया सक्षम है।

पाठ्यक्रम: हिन्दी विभाग में एम. ए. हिन्दी पाठ्यक्रम तथा पी-एच.डी. हिन्दी पाठ्यक्रम संचालित हैं। विगत दशकों में रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए विकसित हुए नये अवसरों को ध्यान में रखकर हिन्दी विभाग ने अपने एम.ए. पाठ्यक्रम का निर्माण किया है। वर्तमान पाठ्यक्रम भाषा के रोजगारपरक संचार सम्बन्धी पहलुओं को उजागर करने की कोशिश करता है। इन पाठ्यक्रमों में स्त्री, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक तथा हाशिये के समाज पर केंद्रित साहित्य की विविध विधाओं, आधुनिक साहित्य सिद्धांतों, तुलनात्मक साहित्य, लोक साहित्य, संस्कृति, सिनेमा, प्रयोजनमूलक हिन्दी, अनुवाद एवं मीडिया अध्ययन आदि विषयों पर विशेष जोर दिया गया है।

1. एम. ए. हिन्दी (Intake Capacity 30)
2. पी-एच.डी.

अवधि: एम.ए. पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष अर्थात् चार सत्र होगी तथा पी-एच.डी. की न्यूनतम अवधि तीन वर्ष अर्थात् छह सत्र होगी।

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

वर्तमान पाठ्यक्रम भाषा के रोजगारपरक संचार संबंधी पहलुओं को उजागर करने की कोशिश करता है। एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम के उद्देश्य निम्नवत हैं:

- अंतर अनुशासनिक विस्तार हेतु तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन एवं शोध को महत्त्व प्रदान करना।
- विविध साहित्यिक आन्दोलनों तथा समकालीन साहित्यिक विधाओं का ज्ञान प्रदान करना।
- छात्रों को परम्परागत साहित्यिक अध्यापन के साथ-साथ विविध क्षेत्रों में कैरियर निर्माण हेतु प्रकाशन, रंगमंच, रेडियो, टेलीविज़न, पटकथा लेखन, विज्ञापन और कॉरपोरेट संचार क्रियात्मक कला, अनुवाद, पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में प्रशिक्षित करना।
- उपर्युक्त क्षेत्रों में विशेषज्ञता के लिए तैयार करना।
- रचनात्मक और पेशेवर लेखन में कैरियर बनाने के साथ-साथ जनसंचार, भाषा, सांस्कृतिक अध्ययन, तुलनात्मक साहित्य और अन्य क्षेत्रों में शोध कार्यों के लिए कुशल बनाना।
- समकालीन मुद्दों के प्रति उन्हें जागरूक और संवेदनशील बनाना।
- सबसे महत्वपूर्ण एक अच्छे व्यक्तित्व के निर्माण हेतु छात्रों की सहायता करना।

प्रवेश अर्हता एवं प्रवेश प्रक्रिया:

हिन्दी विभाग में संचालित एम.ए. तथा पीएच.डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षा (CUCET) उत्तीर्ण कर प्रवेश पा सकते हैं। पीएच.डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए अभ्यर्थियों को साक्षात्कार परीक्षा भी देनी होगी। एम.ए. कक्षा में प्रवेश हेतु प्रवेशार्थी की स्नातक या समकक्ष कक्षा में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक होने अनिवार्य है तथा आरक्षण के नियमानुकूल अंकों में छूट देय है। प्रवेश संबंधी जानकारी एवं प्रवेश परीक्षा (CUCET) के पाठ्यक्रम संबंधी जानकारी हेतु प्रवेशार्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.curaj.ac.in देख सकते हैं।

CBCS course structure for M.A. Hindi

To get the degree of M.A. Hindi, students have to earn a total of 96 credits. Details of Courses & Credits in each semester are as follow:

Semester I		Semester II		Semester III		Semester IV	
Courses	Credits	Courses	Credits	Courses	Credits	Courses	Credits
C	4	C	4	C	4	C	4
C	4	C	4	C	4	C	4
C	4	C	4	C	4	DSE	4
C	4	DSE	4	DSE	4	GE	4
DSE	4	DSE	4	GE	4	Dissertation	8
AEC	2	AEC	2	AEC	2	Fitness	½
AEC	2	Fitness	½	Fitness	½	Societal	½
Fitness	½	Societal	½	Societal	½		
Societal	½						
Total	25	Total	23	Total	23	Total	25
Core Courses – 12 (48 Credits), DSE Departmental Electives – 5 (20 Credits), GE Generic Electives – 2 (8 Credits), AEC Ability Enhancement Courses – 4 (8 Credits), D Dissertation – 1 (8 Credits), Fitness 4 (2 Credits), Societal – 4 (2 Credits)							
Total Credits 96							

Fitness*	Fitness*	Fitness*	Fitness*	Total 2 credits from 4 Semesters
Societal*	Societal *	Societal*	Societal *	Total 2 credits from 4 Semesters

Course Structure

क्र.सं.	विषय कोड	कोर्स का शीर्षक	कोर्स के प्रकार (C/DE/GE/AECC/D)	Credits	Contact hours/week		
					L	I.L.	P
प्रथम सत्र							
1.	HIN 401	हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल)	C	4	2	2	
2.	HIN 402	हिंदी भाषा का स्वरूप एवं इतिहास	C	4	2	2	
3.	HIN 403	प्राचीन एवं मध्यकालीन हिंदी काव्य	C	4	2	2	
4.	HIN 404	हिंदी आलोचना	C	4	2	2	
5.	HIN 405	वैकल्पिक – I विभाग से (D-Elective)	DSE	4	2	2	
6.	HIN 431	वक्तृत्व कौशल विकास (AEC)**	AEC	2	1	-	4
7.	HIN 432	अनुवाद कौशल (AEC)**	AEC	2	1	-	4
8.		Fitness*		½			2
9.		Societal*		½			2
द्वितीय सत्र							
10.	HIN 411	हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)	C	4	2	2	
11.	HIN 412	हिंदी कहानी	C	4	2	2	
12.	HIN 413	हिंदी उपन्यास	C	4	2	2	
13.	HIN 414	वैकल्पिक – I विभाग से (D-Elective)	DSE	4	2	2	
14.	HIN 415	वैकल्पिक – II विभाग से (D-Elective)	DSE	4	2	2	
15.	HIN 433	समाचार एवं विज्ञापन लेखन (AEC)**	AEC	2	1	-	4
16.		Fitness*		½			2
17.		Societal*		½			2
तृतीय सत्र							
18.	HIN 501	आधुनिक हिंदी कविता	C	4	2	2	
19.	HIN 502	राजस्थानी लोक संस्कृति और साहित्य	C	4	2	2	
20.	HIN 503	भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य चिंतन	C	4	2	2	
21.	HIN 504	वैकल्पिक – I विभाग से (D-Elective)	DSE	4	2	2	
22.	HIN 505	वैकल्पिक – II अन्य विभाग से (Ex-D Elective)	GE	4	2	2	
23.	HIN 531	रचनात्मक लेखन (AEC)**	AEC	2	1	-	4
24.		Fitness*		½			2
25.		Societal*		½			2

चतुर्थ सत्र							
26.	HIN 511	हिंदी नाटक और रंगमंच	C	4	2	2	
27.	HIN 512	हिंदी के अन्य गद्य रूप	C	4	2	2	
28.	HIN 513	वैकल्पिक – I विभाग से (D-Elective)	DSE	4	2	2	
29.	HIN 514	वैकल्पिक – II अन्य विभाग से (Ex-D Elective)	GE	4	2	2	
30.	HIN 515	लघु शोध परियोजना (Dissertation)	D	8	-	-	16
31.		Fitness*		½			2
32.		Societal*		½			2

L- Lecture, **I. L.** – Integrated Learning involving Seminars, Tutorials, Group Discussion, Assignments, **P** – Practical.

*In Fitness the students are expected to participate in any physical activity (e.g. Yoga) and in Societal they need to engage in some social activity (e.g. NSS) in the university, right from I Semester to the IV Semester. By participating in both these activities the student will be earning 4 credits (2 credits for Fitness & 2 Credits for Societal) by the end of the four semesters. The score 2 credits for each (Fitness and Societal) will be proportionately spread over the four semesters and cannot be earned in any one or two semesters.

**The Skill Enhancement courses spread over the three semesters are compulsory.

C (Core Course) – These are Core Courses & compulsory for all students.

DSE (Department Specific Electives) – Students need to opt for 1 Department Specific Electives in Semester I, 2 in Semester II and 1 each in Semester III and Semester IV.

GE (Generic Electives) – Students need to opt for 1 Generic Elective (ideally from any other department) in Semester III and Semester IV. If any student is not comfortable with the medium of language (English) offered by other department he/she may choose course from departmental electives.

AEC (Ability Enhancement Courses) – These are the compulsory skill based courses which can increase the job prospects in various professional fields and enable students to be freelancers. Students will study two courses of each 2 credits in I, II and III semesters.

D (Dissertation) – There will be dissertation in fourth semester of 8 credits. This will improve research skills in the students.

वैकल्पिक कोर्सेस की सूची (List of Elective Courses):

Sr. No.	Course Code	Title of the Course	Credits	Contact hours/week		
				L	I.L.	P
1	HIN 551	कार्यालयीन हिंदी	4	4	2	2
2	HIN 552	तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन	4	4	2	2
3	HIN 553	भारतीय उपन्यास	4	4	2	2
4	HIN 554	हिंदी का स्त्रीवादी साहित्य	4	4	2	2
5	HIN 555	अनुवाद सिद्धांत व व्यवहार	4	4	2	2
6	HIN 556	मीडिया विमर्श: सिद्धांत और अनुप्रयोग	4	4	2	2
7	HIN 557	हिंदी का अस्मितामूलक साहित्य	4	4	2	2
8	HIN 558	हिंदी का प्रवासी साहित्य	4	4	2	2
9	HIN 559	विशेष अध्ययन: मीरा	4	4	2	2
10	HIN 560	विशेष अध्ययन: प्रेमचंद	4	4	2	2
11	HIN 561	विशेष अध्ययन: गुरु जम्भेश्वर	4	4	2	2
12	HIN 562	आधुनिक भारतीय कविता	4	4	2	2
13	HIN 563	विश्व साहित्य : सामान्य अध्ययन	4	4	2	2
14	HIN 564	पटकथा लेखन	4	4	2	2
15	HIN 565	हिंदी साहित्य और सिनेमा	4	4	2	2
16	HIN 566	राजस्थान का भक्ति काव्य	4	4	2	2
17	HIN 567	21 सदी के राजस्थान के प्रमुख हिंदी नाटक एवं नाटककार	4	4	2	2
19	HIN 568	दक्षिण भारत के प्रमुख संत कवि एवं काव्य	4	4	2	2
20	HIN 569	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता	4	4	2	2

Detailed Syllabus

Course code	HIN 401
Course Name:	हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल तक)
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य साहित्य के स्वरूप, उसकी प्रवृत्तियों एवं उसकी उपलब्धियों से विद्यार्थियों को अवगत करवाना है। साहित्य के आंतरिक एवं बाह्य संघर्ष की गाथा को सरल व सुबोध भाषा में वर्णन कर राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का दिग्दर्शन करवाना है। हिंदी साहित्य के इतिहास, उस काल विशेष के साहित्यकारों, उस काल की प्रवृत्तियों और सीमा ज्ञान से अवगत होना है। साथ ही विद्यार्थी यह भी जान सकेंगे कि जनता की चित्तवृत्तियों में परिवर्तन से साहित्य एवं भाषा में किस प्रकार परिवर्तन होता है।	
Learning Outcomes: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी इस बात से अवगत हो सकेंगे कि प्रत्येक काल का साहित्य उस युग की चित्तवृत्तियों पर निर्भर करता। प्रत्येक काल का साहित्य मानवीय भावबोध को प्रकट करता है। तत्कालीन कवियों की काव्य कला एवं भाषा शिल्प से परिचित हो सकेंगे जो आगामी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक होता है।	
Course Details:	
इकाई 1: हिंदी साहित्य का आदिकाल, प्रमुख रासो ग्रंथ, जैन साहित्य, सिद्ध तथा नाथ साहित्य, प्रमुख कवियों एवं युगीन प्रवृत्तियों का परिचय, अमीर खुसरो की हिंदी कविता, विद्यापति की पदावली, लौकिक काव्य (15L)	
इकाई 2: हिंदी साहित्य का पूर्व मध्यकाल, भक्तिकाल के उदय के सामाजिक-आर्थिक कारण, प्रमुख कवि एवं प्रवृत्तियाँ, सगुण एवं निर्गुण भक्ति का स्वरूप, संत, सूफी, राम तथा कृष्ण काव्यधाराएँ, वैष्णव भक्ति का उदय एवं आलवार संत, (10L)	
इकाई 3: भक्ति आंदोलन के प्रमुख कवि, कबीर, दादू, नानक तथा रैदास, दाउद, कुतुबन, जायसी तथा मंझन, तुलसी, सूरदास, नंददास तथा रसखान, भ्रमरगीत परंपरा (15L)	
इकाई 4: हिंदी साहित्य का उत्तर मध्यकाल, रीतिकालीन साहित्य के उद्भव की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियाँ, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, काव्य शास्त्रीय परंपरा से संबंध, प्रमुख धाराएँ, केशव, बिहारी, मतिराम, भूषण, घनानंद, देव, आलम एवं पद्माकर का अध्ययन (15L)	
संदर्भ पुस्तकें :-	
<ol style="list-style-type: none"> 1. हिंदी साहित्य इतिहास - रामचंद्र शुक्ल, भारती पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर, दिल्ली, संस्करण 2015, मूल्य 600 2. भारतीय साहित्य का दूसरा इतिहास- बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1997, मूल्य 140 रु. 3. भक्तिकाव्य और लोकजीवन - शिवकुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1983, 250 रु. 4. हिंदी साहित्य की भूमिका - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2017, मूल्य 600 रु. 5. हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपरबैक्स, दिल्ली, संस्करण 2013, मूल्य 280 रु 6. कबीर - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2008, मूल्य 250 रु 7. हिंदी साहित्य का आदिकाल-हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2017, मूल्य 688 रु. 8. भारतीय सौन्दर्यबोध और तुलसीदास, रामविलास शर्मा, साहित्य अकादमी, दिल्ली, संस्करण 2015, मूल्य 450रु. 	

Course code	HIN 402
Course Name:	हिंदी भाषा का स्वरूप एवं इतिहास
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस प्रश्न पत्र में हिंदी भाषा के स्वरूप एवं इतिहास का अध्ययन-अध्यापन किया जाएगा। इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत से लेकर हिंदी के वर्तमान स्वरूप तक हिंदी की विकास यात्रा एवं बोलियाँ, लिपि और मानकीकरण सहित हिंदी के प्रसार से अवगत कराना है।	

Learning Outcomes: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी इस बात से अवगत हो सकेंगे कि किस प्रकार संस्कृत से अपनी आरम्भिक यात्रा शुरू कर 5000 वर्ष में पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, पुरानी हिंदी (अवधी, ब्रज, दक्खिनी हिंदी) के पड़ावों से गुजरती हुई हिंदी आज के स्वरूप को प्राप्त की है। हिंदी प्रसार के प्रमुख आंदोलन तथा प्रमुख संस्थान, हिंदी की प्रमुख बोलियों का परिचय, हिंदी उर्दू और हिंदुस्तानी, देवनागरी लिपि का आधुनिकीकरण, भाषा नियोजन, पिजिन-क्रियोल, राजभाषा, संपर्कभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी, वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी, विश्व में हिंदी शिक्षण और शैक्षणिक संस्थाओं के बारे में पूरी जानकारी का लाभ प्राप्त कर पाएंगे।

Course Details:

इकाई 1: भाषा और समाज भाषा और समाज का अंतःसंबंध, भाषायी विविधता, भाषा एवं बोली में संबंध | विश्व के भाषा परिवार, भारतीय भाषा परिवार | (15L)

इकाई 2: हिंदी भाषा का उद्भव विकास और परंपरा (पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, पुरानी हिंदी) | अपभ्रंश, अवहट्ट तथा पुरानी हिंदी का संबंध | काव्य भाषा के रूप में अवधी और ब्रज का उदय एवं विकास, दक्खिनी हिंदी | (10L)

इकाई 3: खड़ी बोली हिंदी तथा अन्य जनपदीय बोलियाँ, हिंदी प्रसार के प्रमुख आंदोलन तथा प्रमुख संस्थान | हिंदी की प्रमुख बोलियों का परिचय, हिंदी उर्दू और हिंदुस्तानी | देवनागरी लिपि का आधुनिकीकरण, भाषा नियोजन, पिजिन-क्रियोल | अर्थ विज्ञान, ध्वनि विज्ञान (20L)

इकाई 4: हिंदी की सांविधिक स्थिति, राजभाषा, संपर्कभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी | वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी, विश्व में हिंदी शिक्षण और शैक्षणिक संस्थाएँ | (15L)

संदर्भ पुस्तकें :-

1. हिंदी शब्दानुशासन-किशोरी दास वाजपेयी, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1976, 10 रु
2. भाषा और समाज-रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, 806 रु
3. भारतीय आर्य भाषा और हिंदी-सुनीति कुमार चटर्जी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020, 716 रु
4. भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी-रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, 1,395 रु
5. भारत की भाषा समस्या-रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, 695 रु
6. हिंदी भाषा का इतिहास-धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी अकादमी, प्रयाग, 1940
7. भाषा विज्ञान की भूमिका-डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, 750 रु
8. भाषा विज्ञान- भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद, 2016, 220 रु
9. हिंदी भाषा- डॉ. हरदेव बाहरी अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013, 150 रु

Course code	HIN 403
Course Name:	प्राचीन एवं मध्यकालीन हिंदी काव्य
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस प्रश्न पत्र में हिंदी काव्य के प्राचीनकाल, पूर्व मध्यकाल और उत्तर मध्यकाल के प्रमुख रचनाकारों और उनकी कृतियों पर चर्चा की जाएगी। इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी की आदिकालीन, भक्तिकालीन और रीतिकालीन काव्य प्रवृत्तियों से अवगत कराना तथा तत्कालीन प्रमुख कवियों और उनकी कृतियों का परिचय देना।	
Learning Outcomes: इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी इस बात से अवगत हो सकेंगे कि हिंदी साहित्य में प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य का कितना महत्वपूर्ण स्थान है। इस काव्य ने परवर्ती कालों को प्रभावित करने में कितनी अहम् भूमिका का निर्वाह किया है। इस काव्य ने किस प्रकार भारत की भावनात्मक एकता एवं सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण कार्य किया है इस बात से भी छात्र अवगत हो जाएंगे।	
Course Details:	

इकाई 1: आदिकालीन काव्य - बीसलदेव रासो-नरपति नाल्ह (सं. माता प्रसाद) पद संख्या-67-76, विद्यापति पदावली (सं. रामवृक्ष वेनीपुरी) पद संख्या 1-10 (15L)
इकाई 2: पूर्वमध्यकालीन काव्य (भाग-1) - पद्मावत का नागमती वियोग खंड-मलिक मुहम्मद जायसी, कबीर- (सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी) पद संख्या-160, 161, 162, 163,164, 166, 175, 176, 177, 179, 181, 187, 190, 191 (10L)
इकाई 3: पूर्वमध्यकालीन काव्य (भाग-2) - सूरदास-भ्रमरगीत सार (सं. रामचंद्र शुक्ल) पद संख्या-21,22,23,24,31,38,42,52,62,64 तुलसीदास-विनय पत्रिका पद संख्या- 79, 90, 100, 105, 111, 162, 172, 174, 178. 245 मीरा-वृहत पदावली (सं. नरोक्तम दास) पद संख्या-1-15 (15L)
इकाई 4: उत्तर मध्यकालीन काव्य - रहीम-10 दोहे, (नीतिपरक दोहे) बिहारी सतसई-10 दोहे (बिहारी रत्नाकर -जगन्नाथदास रत्नाकर से चयनित 10 दोहे) घनानंद-घनानंद कवित्त (सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) पद संख्या-1-6 (15L)

संदर्भ पुस्तकें :-

1. कबीर - हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2008, मूल्य 250 रु
2. गोस्वामी तुलसीदास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2008, मूल्य 500 रु.
3. जायसी ग्रंथावली- रामचंद्र शुक्ल (सं.), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2012, मूल्य 500 रु.
4. बिहारी का नया मूल्यांकन, बच्चन सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2019, मूल्य 200 रु.
5. सूरदास-रामचंद्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2012, मूल्य 250 रु.
6. सूर साहित्य-हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2017, मूल्य 350 रु.

Course code	HIN 404
Course Name:	हिंदी आलोचना
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस प्रश्न पत्र में हिंदी आलोचना के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष का विवेचन किया जाएगा इसमें आलोचना के स्वरूप और पद्धतियों की चर्चा करते हुए हिंदी आलोचना के विभिन्न आलोचकों और आलोचना पद्धतियों का अध्ययन किया जाएगा इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी आलोचना के समस्त आयामों से अवगत कराना तथा उनके भीतर आलोचना की समझ विकसित करना है	
Learning Outcomes: इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी आलोचना के प्रमुख सिद्धांत, आलोचना के प्रकार एवं हिंदी के प्रमुख आलोचकों से परिचित हो सकेंगे हिंदी आलोचना का समुचित विवेचन कर सकेंगे हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली से अवगत हो पाएंगे सामाजिक परिप्रेक्ष्य में स्वयं साहित्यिक कृतियों की आलोचना करने में सक्षम हो सकेंगे आलोचना के प्रमुख सिद्धांतों का प्रयोग कर सकेंगे	
Course Details:	
इकाई 1: आलोचना स्वरूप एवं पद्धति, हिंदी आलोचना का उद्भव एवं विकास (15 L)	
इकाई 2 : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नंददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा, (15 L)	
इकाई 3: डॉ. नगेन्द्र, विजयदेवनारायण साही, रामस्वरूप चतुर्वेदी हिंदी आलोचना की पद्धतियाँ (15L)	
इकाई 4: समकालीन हिंदी आलोचना (10 L)	
संदर्भ पुस्तकें :-	
<ol style="list-style-type: none"> 1. हिन्दी आलोचना का विकास – मधुरेश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2019, मूल्य 300 रु. 2. हिन्दी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार,- कृष्णदत्त पालीवाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2012, मूल्य 495 रु. 3. हिंदी आलोचना: शिखरों का साक्षात्कार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2019, मूल्य 700 रु. 4. हिंदी आलोचना की परंपरा और आचार्य रामचंद्र शुक्ल – शिवकुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2012, मूल्य 450 रु. 	

5. आलोचना का आधुनिक बोध – रामदरश मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2018, मूल्य 595 रु.

Course code	HIN 431
Course Name:	वक्तृत्व कौशल विकास (AEC)
Credit, Mode:	2, LTP : 1+0+4
Course Objectives: यह प्रश्न पत्र कौशल विकास पर आधारित है इस प्रश्न पत्र का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में वक्तृत्व कौशल का विकास करना है इसमें वक्तृत्व कला का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया जाएगा इस प्रश्न पत्र में अध्यापन पर अधिक बल न देते हुए विद्यार्थियों को अधिक से अधिक वक्तृत्व कला को विकसित करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा	
Learning Outcomes: इस पाठ्यक्रम के विद्यार्थी वक्तृत्व के महत्त्व से अवगत हो पाएंगे तथा अपने वक्तृत्व कला से सम्बंधित सभी सकारात्मक आयामों को जान पाएंगे वक्तृत्व कला के सभी गुणों से अवगत होकर एक सफल वक्ता बन पाएंगे यह प्रश्नपत्र विद्यार्थियों की झिझक एवं को समाप्त कर उनके आत्मविश्वास को वृद्धिगत करेगा भविष्य में किसी भी क्षेत्र में कार्यरत होने पर विद्यार्थी वक्तृत्व कौशल के सम्बन्ध में प्राप्त ज्ञान का समुचित उपयोग कर पाएंगे	
Course Details:	
इकाई 1: वक्तृत्व कौशल का महत्त्व, अध्ययन एवं वक्तृत्व में अंतर, सफल वक्तृत्व के कारक तत्व (3L)	
इकाई 2: वक्तृत्व कौशल के विविध आयाम, वक्तृत्व कौशल में व्यक्तित्व की भूमिका (3L)	
इकाई 3: वक्तृत्व कौशल विकास हेतु छात्रों की प्रायोगिक सहभागिता (20 L)	
संदर्भ पुस्तक :-	
<ol style="list-style-type: none"> भाषण कला – महेश शर्मा, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2013, मूल्य 350 रु. संबोधन के सोपान – जे.आर.डी. टाटा, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2015, मूल्य 350 रु. सफल वक्ता सफल व्यक्तित्व, उज्जवल पाटनी, डायमण्ड पॉकेट बुक्स, सं. 2007, मूल्य 250 रु. आओ, बनें सफल वक्ता – सूर्या सिन्हा, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2010, मूल्य 250 रु. 	

Course code	HIN 433
Course Name:	अनुवाद कौशल (AEC)
Credit, Mode:	2, LTP : 1+0+4
Course Objectives: यह प्रश्न पत्र कौशल विकास पर आधारित है इस प्रश्न पत्र का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में अनुवाद कौशल का विकास करना है इसमें अनुवाद कला का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया जाएगा इस प्रश्न पत्र में अध्यापन पर कम बल देते हुए विद्यार्थियों को अधिक से अधिक अनुवाद कला को विकसित करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा	
Learning Outcomes: इस पाठ्यक्रम के विद्यार्थी अनुवाद के महत्त्व से अवगत हो पाएंगे तथा अनुवाद कला से सम्बंधित सभी आयामों से अवगत हो पाएंगे अनुवाद कला के सभी गुणों से अवगत होकर एक सफल अनुवादक बन पाएंगे यह प्रश्नपत्र विद्यार्थियों को अनुवाद के क्षेत्र में कार्य करने के लिए सक्षम बना सकेगा जिससे आने वाले समय में विद्यार्थी अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर पाएंगे	
Course Details:	
इकाई 1: अनुवाद: अवधारणा एवं स्वरूप, अनुवाद का महत्त्व, अनुवाद के प्रकार (3L)	
इकाई 2: अनुवाद के विविध आयाम, सफल अनुवादक के गुण, अनुवाद प्रविधि (3L)	
इकाई 3: हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद, अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद (20 L)	

संदर्भ पुस्तकें :-
<ol style="list-style-type: none"> 1. अनुवाद: सिद्धांत एवं व्यवहार - डॉ. जयंतीप्रसाद नौटियाल, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2006, मूल्य 175 रु. 2. अनुवाद क्या है – राजमल बोरा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2019, मूल्य 450 रु. 3. अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य – रीतारानी पालीवाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018, मूल्य 495 रु. 4. अनुवाद की समस्याएँ - जी. गोपीनाथन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2011, मूल्य 495 रु. 5. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा-सुरेश कुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018, मूल्य 250 रु.

Course code	HIN 411
Course Name:	हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0

Course Objectives: इस प्रश्नपत्र में हिंदी साहित्य के इतिहास का अध्ययन तथा अध्यापन किया जाएगा इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक हिंदी साहित्य की विकास यात्रा, साहित्य के विभिन्न आंदोलनों तथा उनसे जुड़ी विचारधाराओं का परिचय देना तथा आधुनिक काल के प्रमुख लेखकों के रचनात्मक योगदान से अवगत कराना है।

Learning Outcomes: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी इस बात से अवगत हो सकेंगे कि किस प्रकार स्वतंत्रता आन्दोलन में एकता कायम करने में हिंदी ने महती भूमिका निभायी, नवजागरण में हिंदी साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विकास और भारतेंदु से शुरू हुआ आधुनिक हिंदी का साहित्य अपने पड़ाव पार करता हुआ महावीर प्रसाद द्विवेदी से व्याकरण की दृष्टि से शुद्धता प्राप्त कर अनेक आयाम में अपने को विकसित कर आगे निरंतर बढ़ता रहता है। छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद में पन्त, प्रसाद निराला, महादेवी, मुक्तिबोध, अज्ञेय आदि कवियों की रचनाओं की जानकारी के साथ- साथ विश्व स्तर पर साहित्य में आयी नयी विचारधारा अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, मोनोविज्ञान आदि का प्रभाव हिंदी साहित्य पर किस प्रकार रहा की जानकारी से अवगत होंगे। हिंदी गद्य साहित्य की विस्तृत जानकारी के साथ- साथ हिंदी साहित्य में नए आंदोलनों की जानकारी भी प्राप्त कर सकेंगे।

Course Details:

इकाई 1: भारतेंदु युग - आधुनिक साहित्य के विकास की परिस्थितियाँ, फोर्ट विलियम कॉलेज की हिंदी, भारतेंदु से पूर्व के लेखकों की हिंदी तथा उनकी रचनाएँ, 1857 की क्रांति और हिंदी साहित्य | भारतेंदु युगीन प्रमुख लेखक एवं उनकी रचनाएँ, प्रमुख पत्रिकाएँ गद्य विधाओं का विकास (15L)

इकाई 2: द्विवेदी युग तथा प्रेमचंद - हिंदी भाषा तथा साहित्य के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान, सरस्वती पत्रिका की भूमिका, युग के प्रमुख रचनाकार तथा उनकी कृतियाँ एवं प्रवृत्तियाँ, मैथिलीशरण गुप्त और राष्ट्रीयता, हिंदी तथा नवजागरण एवं राष्ट्रवाद | प्रेमचंद का रचनाकर्म, प्रेमचंद के समकालीन लेखक-जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी, भगवती चरण वर्मा आदि। (10L)

इकाई 3: छायावाद और प्रगतिवाद - छायावादी काव्य की विशेषताएँ, स्वच्छंदतावादी प्रभाव, जयशंकर प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा तथा सुमित्रानंदन पंत की रचनाएँ एवं प्रवृत्तियाँ, तुलनात्मक अध्ययन | प्रगतिवाद का उदय, प्रमुख कारण तथा राष्ट्रीय- अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ, प्रमुख प्रगतिवादी लेखक और उनका साहित्य (15L)

इकाई 4: छायावादोत्तर साहित्य :- प्रयोगवाद, नयी कविता, नयी कहानी तथा अन्य आंदोलन | प्रयोगवादी साहित्य और तारसप्तक, अस्तित्ववाद तथा मनोविश्लेषणवाद, मार्क्सवाद | स्वातंत्र्योत्तर साहित्य और भारत विभाजन, नयी कविता तथा नयी कहानी, प्रमुख लेखक तथा प्रवृत्तियाँ, जनांदोलन तथा साहित्य के संबंध, परवर्ती साहित्यिक प्रवृत्तियाँ तथा समकालीन परिदृश्य, लघु पत्रिकाओं की भूमिका, स्त्री-दलित साहित्य, हिंदीतर साहित्य, प्रवासी साहित्य (15L)

संदर्भ पुस्तकें :-

1. हिंदी साहित्य का इतिहास- रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी,
2. हिंदी साहित्य का विवेचनपरक इतिहास- मोहन अवस्थी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, 150 रु
3. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास-बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 2017, 895 रु

4. महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा हिंदी नवजागरण-रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, 2015, 750 रु
5. हिंदी साहित्य का इतिहास- सं-डॉ.नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2013, 265
6. प्रेमचंद और उनका युग-रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, 716 रु
7. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ-नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2004, 150 रु
8. हिंदी का गद्य साहित्य- डॉ. रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014, 750 रु
9. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास- रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2012, 115 रु

Course code	HIN 412
Course Name:	हिंदी कहानी
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी कहानी की विभिन्न प्रवृत्तियों, रचनाकारों और कृतियों का परिचय देना है। आधुनिक हिंदी कहानी का ऐतिहासिक पक्ष, प्रवृत्तियाँ और रचनाकारों की जानकारी; इस काल खंड के प्रमुख रचनाकारों और उनकी कृतियाँ, कहानी के विभिन्न पक्षों और रचनाकारों से संबंधित आलोचनात्मक दृष्टि का अध्ययन कराया जाएगा।	
Learning Outcomes: इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी हिंदी कहानी साहित्य के प्रति अपनी समझ विकसित कर सकेंगे विविध सामाजिक समस्याओं तथा अन्य घटना-प्रसंगों को कैसे रचनात्मक स्तर पर चित्रित किया जा सकता है इसे समझ सकेंगे साहित्य के जरिए समाज के प्रति एक नूतन भाव बोध निर्मित होगा सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक दृष्टि का विकास होगा	
Course Details:	
इकाई 1: आरंभिक काल - हिंदी कहानी – अवधारणा, स्वरूप एवं तत्व, हिंदी कहानी का उद्भव और विकास (15L)	
इकाई 2: प्रमुख हिंदी कहानियाँ-1 - चंद्रधर शर्मा गुलेरी-उसने कहा था, प्रेमचंद-ईदगाह व कफ़न, जयशंकर प्रसाद-आकाशदीप, जैनेन्द्र-अपना अपना भाग्य, उषा प्रियंवदा-वापसी, अज्ञेय-रोज, यशपाल-परदा (15L)	
इकाई 3: प्रमुख हिंदी कहानियाँ-2 - रेणु-लाल पान की बेगम, निर्मल वर्मा-परिदे, कमलेश्वर – राजा निरबंसिया, शेखर जोशी – कोसी का घटवार, मन्नु भंडारी-त्रिशंकु, ज्ञानरंजन – पिता (15L)	
इकाई 4: वर्तमान परिदृश्य - (10L)	
संदर्भ पुस्तकें :-	
<ol style="list-style-type: none"> 1. कहानी : नयी कहानी-नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2016, मूल्य 300 रु. 2. हिंदी कहानी का विकास – मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2014, मूल्य 250 रु. 3. एक दुनिया समानांतर (भूमिका), राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018, मूल्य 795 रु. 4. हिंदी कहानी का इतिहास - गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2016, मूल्य 695 रु. 5. नई कहानी की भूमिका - कमलेश्वर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2015, मूल्य 400 रु. 6. हिंदी कहानी संवेदना और संरचना - साधना शाह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2014, मूल्य 200 रु. 	

Course code	MAH 413
Course Name:	हिंदी उपन्यास
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य हिंदी उपन्यासों के इतिहास, ऐतिहासिक विकास और उपन्यास की अवधारणा और समकालीन परिदृश्य से परिचित करवाना है। जिसका उद्देश्य हिंदी उपन्यास विधा के उदय की ऐतिहासिक स्थितियों का परिचय देना और आरंभिक हिंदी उपन्यासों का वर्णन, प्रेमचंदयुगीन उपन्यास कला का सविस्तर परिचय, हिंदी के प्रमुख उपन्यासों का पाठगत अध्ययन व विश्लेषण, उपन्यास की वर्तमान स्थिति और प्रवृत्तियों का अध्ययन है।	

<p>Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी इस बात से अवगत हो सकेंगे कि उपन्यास विधा न केवल मनोरंजन का आधार मात्र है, अपितु समाज के बदलाव और परिवर्तन में इनकी महती भूमिका है। ऐतिहासिक पात्रों और आंचलिक पात्रों की स्थितियों, परस्पर उनके व्यवहार, मनोविज्ञान और प्रदेय को समझ सकेंगे। क्षेत्र विशेष की संस्कृति और वहां के लोकजीवन का मूल्यांकन कर सकेंगे।</p>
<p>Course Details:</p>
<p>इकाई 1: उपन्यास : उदय के सामाजिक, ऐतिहासिक कारण एवं परिस्थितियाँ, हिंदी उपन्यास एवं मध्यवर्ग भारतेन्दुयुगीन प्रमुख हिंदी उपन्यास व प्रवृत्तियाँ, उपन्यास व तिलिस्म-रोमांच, उपन्यास की प्रमुख धाराएं परीक्षा गुरु सामान्य परिचय, (15L)</p>
<p>इकाई 2: प्रेमचंद युगीन उपन्यास प्रेमचंद और उनके उपन्यास –सामान्य परिचय, गोदान का पाठगत अध्ययन व विश्लेषण – गोदान कृषक जीवन का महाकाव्य, आदर्श और यथार्थवाद, गोदान शीर्षक की सार्थकता, गोदान की समस्याएँ, गोदान भारतीय किसान की ट्रेजडी, गोदान का उद्देश्य (15L)</p>
<p>इकाई 3: प्रेमचंदोत्तर उपन्यास बाणभट्ट की आत्मकथा – उपन्यास या जीवनी, अदृष्ट प्रेम, सामंती जीवन का उत्सवी चित्रण, इतिहास और कवि कल्पना, बाणभट्ट, भट्टिनी और निपुणिका का चरित्र, शेखर एक जीवनी-अज्ञेय-विद्रोही चेतना, व्यक्ति एवं स्वातंत्र्य की खोज, उपन्यास या आत्मकथा मैला आंचल – आंचलिक उपन्यास परंपरा, सामाजिक सांस्कृतिक जीवन, राजनीति एवं आर्थिक शोषण (15L)</p>
<p>इकाई 4: अन्य रचनाकार व उपन्यास: मानस का हंस या रागदरबारी का सामान्य परिचय (10L)</p>
<p>संदर्भ पुस्तकें :-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. प्रेमचंद युगीन भारतीय समाज - डॉ. इंद्रमोहन कुमार सिन्हा, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, संस्करण 1974, मूल्य 15 रु. 2. प्रेमचंद और भारतीय समाज - नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, मूल्य 150 रु. 3. साहित्य और समाज - विजयदान देथा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2014, मूल्य 250 रु. 4. भाषा और समाज - रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2010, मूल्य 210 रु. 5. नई पीढ़ी के लिए गोर्की, प्रेमचन्द, लू शुन - राणा प्रताप, गार्गी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2018, मूल्य 80 रु. 6. हिंदी उपन्यास का विकास - मधुरेश सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2015, मूल्य 120 रु. 7. बाणभट्ट की आत्मकथा पाठ और पुनर्पाठ—सं मधुरेश, आधार प्रकाशन, हरियाणा, संस्करण 2007, मूल्य 350 रु.

Course code	MAH 433
Course Name:	समाचार एवं विज्ञापन लेखन
Credit, Mode:	2, LTP : 2+1+4
<p>Course Objectives: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को मीडिया के क्षेत्र में कार्य करने हेतु सक्षम बनाना है। इस प्रश्न पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों की विज्ञापन एवं समाचार के प्रति समझ विकसित होगी। विद्यार्थी विज्ञापन एवं समाचार के स्वरूप एवं कारक तत्वों से अवगत हो पाएंगे। इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य है विज्ञापन एवं समाचार लेखन प्रविधि का छात्रों को ज्ञान प्रदान कर उन्हें विज्ञापन एवं समाचार लेखन में निपुण बनाना।</p>	
<p>Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी इस बात से अवगत हो सकेंगे कि सामान्य लेखन, रचनात्मक लेखन एवं मीडिया लेखन में क्या नातर होता है। विद्यार्थी समाचार एवं विज्ञापन लेखन की बारीकियों को जान पाएंगे। वे सफलतापूर्वक विज्ञापन एवं संचार लेखन कर इस क्षेत्र में कार्य करने हेतु सक्षम हो पाएंगे।</p>	
<p>Course Details:</p>	
<p>इकाई 1: समाचार: अवधारणा एवं स्वरूप, समाचार के कारक तत्व, समाचार के प्रकार, समाचार लेखन प्रविधि (5L)</p>	
<p>इकाई 2: विज्ञापन: अवधारणा एवं स्वरूप, विज्ञापन के कारक तत्व, विज्ञापन के प्रकार, विज्ञापन लेखन प्रविधि</p>	

(5L)

इकाई 3: समाचार एवं विज्ञापन लेखन की प्रायोगिक तैयारी करवाकर विद्यार्थियों के लेखन कौशल को विकसित करना | (20L)

संदर्भ पुस्तकें :-

1. समाचार लेखन – पी. के. आर्य, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2016, मूल्य 250 रु.
2. मीडिया लेखन – सुमित मोहन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2019, मूल्य 250 रु.
3. मीडिया और बाजारवाद – सं. रामशरण जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2019, मूल्य 350 रु.
4. आधुनिक विज्ञापन – प्रेमचंद पातंजलि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018, मूल्य 200 रु.
5. मीडिया हूँ मैं – जयप्रकाश त्रिपाठी, अमन प्रकाशन, कानपुर, सं. 2014, मूल्य 550 रु.

Course code	HIN 501
Course Name:	आधुनिक हिंदी कविता
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आधुनिक हिंदी कविता के ऐतिहासिक विकास से परिचित करवाना है। साथ ही आधुनिक हिंदी कविता का पाठगत अध्ययन व विश्लेषण का अध्ययन है। इस प्रश्नपत्र में आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख कवियों की समालोचना, कविताओं का आलोचनात्मक विवेचन, काव्य सौंदर्य, उपादेयता एवं प्रासंगिकता का अनुशीलन अपेक्षित है।	
Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी आधुनिक, आधुनिकता, आधुनिकतावाद, आधुनिकीकरण आदि शब्दावलियों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। आधुनिक युग ने हिंदी कविता के विषय, स्वरूप, प्रवृत्ति आदि में किस प्रकार परिवर्तन किया, वह किस प्रकार समाज से जुड़ती है जूझती है आदि की जानकारी आधुनिक कवियों उनकी प्रसिद्ध कविताओं के माध्यम से प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही बदलते परिवेश में कविता रचना किस प्रकार बिम्बों की रचना करती है, नए प्रतीक गढ़ती है इन सब से अवगत हो पाएंगे।	
Course Details:	
इकाई 1 : अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध -प्रिय प्रवास, मैथिलीशरण गुप्त-साकेत नवम सर्ग, (10 L)	
इकाई 2 : जयशंकर प्रसाद-श्रद्धा, लज्जा एवं इडा सर्ग (कामायनी), सुमित्रानंदन पंत-परिवर्तन, प्रथम रश्मि, निराला-राम की शक्तिपूजा, सरोज स्मृति, महादेवी वर्मा-बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ। (20 L)	
इकाई 3: अज्ञेय-असाध्यवीणा, मुक्तिबोध-अंधेरे में, ब्रह्मराक्षस, नागार्जुन-अकाल और उसके बाद, कालिदास	
इकाई 4: दिनकर -रश्मिर्थी, धूमिल-मोचीराम, भवानी प्रसाद मिश्र - गीत फरोश, (15 L),	
संदर्भ पुस्तकें :-	
1. छायावाद-नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, 200 रु	
2. अनभै साँचा, मैनेजर पांडेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012. 495 रु	
3. निराला की साहित्य साधना, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016, 2.687 रु	
4. मुक्तिबोध रचनावली, नेमिचंद्र जैन (सं.), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, 4,200 रु	
5. कामायनी एक पुनर्विचार, मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, 350 रु	
6. महादेवी वर्मा, इंद्रनाथ मदान (सं.), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, 536 रु	
7. अपने-अपने अज्ञेय, ओम धानवी (सं.) वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2011, 1500 रु	

Course code	HIN 502
Course Name:	राजस्थानी लोक संस्कृति और साहित्य
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0

<p>Course Objectives: इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को राजस्थानी लोकसाहित्य से परिचित कराना और उन्हें इस विषय के अध्ययन के लिए प्रेरित करना है। समाज, सभ्यता, संस्कृति, वांगमय, भाषा आदि को समझने के लिए, जानने के लिए, मनुष्य की आदिम प्रवृत्तियों जो उसके शिष्ट होने के बावजूद उसमें निहित है, उसे जानने के लिए लोक साहित्य अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है। राजस्थानी लोकसाहित्य के तत्वों और प्रकारों, राजस्थानी लोकसाहित्य के विकास और उसके सौंदर्यशास्त्र से विद्यार्थी अवगत हो सकेंगे।</p>
<p>Learning outcome: - इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी आधुनिक जीवन को प्रभावित करने वाले कारकों को समझ सकेंगे, आधुनिक जीवन के स्वरूप का अनुमान कर सकेंगे, लोक साहित्य, लोक संस्कृति तथा युगीन सन्दर्भों के संघर्ष की विवेचना कर सकेंगे। लोक साहित्य में आधुनिक युग के परिवर्तनों और लोक मानस की वर्तमान स्थिति को पहचान सकेंगे। हमारे देश में विरासत ही है, जो आज भी अपनी अनूठी पहचान लिए हुए है। संयुक्त परिवार भी इस श्रेणी में आता है। उन सब का बोध होगा। छात्र अपनी समृद्ध परम्पराओं पर गौरव करेंगे और समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, जड़मूल परम्पराओं को दूर कर समतामूलक समाज के निर्माण में सहयोग करेंगे।</p>
<p>Course Details:</p>
<p>इकाई 1: इतिहास और समाज - लोक, लोक साहित्य परिचय एवं स्वरूप ख्यात परिभाषा, राजस्थान की प्रमुख ख्यातों का परिचय, ख्यात साहित्य का वर्गीकरण, ख्यात साहित्य और समाज, ख्यात साहित्य और संस्कृति, बाँकीदास और नैणसी री ख्यात का सामान्य परिचय (15L)</p>
<p>इकाई 2: लोक संस्कृति और साहित्य - वेश-भूषा, खान-पान, रीति-रिवाज, लोक देवता, पर्व त्योहार, लोक तीर्थ, लोक-गीत, लोक कथाएँ, कहावतें, मुहावरे लोक-नाट्य- विषय वस्तु और परिप्रेक्ष्य, राजस्थान के प्रमुख लोक नाट्य-ख्याल (कुचामणि, तुरा-कलंगी, हेला ख्याल, अलिबक्षी ख्याल, चिड़ावी ख्याल) रम्मत (बीकानेर की रम्मत, जैसलमेर की रम्मत, रावलों की रम्मत) पड़/फड़ (पाबूजी की पड़, देवनारायण की पड़), गवरी, नौटंकी, रामलीला (15L)</p>
<p>इकाई 3: प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य - ढोला मारू रा दूहा- एक प्रेम कहानी, प्रेम वर्णन, संयोग श्रृंगार, वियोग श्रृंगार (30 चयनित पद) बातां री फुलवारी (विजयदान देथा), 10 चयनित कहानियां (10L)</p>
<p>इकाई 4: लोकनाट्य और आधुनिक साहित्य - राजस्थान की प्रेम कहानियां (लक्ष्मी कुमारी चूंडावत) 5 चयनित कहानियां तीन बीसी पार –नंद भारद्वाज (सं) चयनित 5 कहानियां (10 L)</p>
<p>संदर्भ पुस्तकें :-</p>
<ol style="list-style-type: none"> 1. भारतीय लोक नाट्य, डॉ. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2011, मूल्य 200 रु. 2. लोक साहित्य- डॉ. सुरेश गौतम, संजय प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2008 मूल्य 600 रु. 3. राजस्थानी साहित्य का इतिहास -हरदान हर्ष, रचना प्रकाशन, जयपुर, संस्करण, 2015, मूल्य 150 रु. 4. राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा - डॉ. जय सिंह नीरज, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, संस्करण, 2013, मूल्य 105 5. राजस्थानी भाषा और साहित्य - मोतीलाल मेनारिया, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, संस्करण 2006, मूल्य 250 रु. 6. राजस्थानी लोकजीवन शब्दावली, ब्रजमोहन जावलिया, साहित्य अकादमी, दिल्ली, संस्करण 2001, मूल्य 400 रु. 7. लोक साहित्य विज्ञान, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, संस्करण 2007, मूल्य 450 रु.

Course code	MAH 503
Course Name:	भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य चिंतन
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
<p>Course Objectives: इस प्रश्नपत्र में विद्यार्थियों को साहित्य शास्त्र के विभिन्न पक्षों से परिचित कराया जाएगा। इस प्रश्नपत्र से विद्यार्थी साहित्य शास्त्र के विभिन्न सैद्धांतिक पक्ष, भारतीय साहित्यशास्त्र के सिद्धांत एवं विद्वानों का परिचय, पाश्चात्य साहित्य शास्त्र के सिद्धांत एवं विद्वानों का परिचय हासिल कर पाएँगे।</p>	
<p>Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त कर पाएँगे। इन सिद्धांतों के आधार पर साहित्य विवेचन की नूतन दृष्टि विकसित कर पाएँगे। भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य चिंतन के अध्ययन</p>	

के द्वारा दोनों के मूलभूत भेद को समझ पाएंगे | साहित्य समीक्षा के नूतन मानदण्ड निर्धारित कर पाएंगे |

Course Details:

इकाई 1: भारतीय साहित्य चिंतन-1- भारतीय साहित्य चिंतन परंपरा का ऐतिहासिक विकास, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य लक्षण, (15 L)

इकाई 2: भारतीय साहित्य चिंतन-2 - सामान्य परिचय: रस, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण, ध्वनि, अलंकार, वक्रोक्ति, रीति, औचित्य (10 L)

इकाई 3: पाश्चात्य साहित्य चिंतन-1- प्लेटो व अरस्तू का अनुकरण सिद्धांत, अरस्तू का विरेचन सिद्धांत, लॉजाइनस का उदात्त तत्व, वर्ड्सवर्थ का काव्य भाषा सिद्धांत, कालरिज का कल्पना सिद्धांत (15 L),

इकाई 4: पाश्चात्य साहित्य चिंतन-2 - सामान्य परिचय: रिचर्ड्स, इलियट के साहित्य सिद्धांत (10 L)

संदर्भ पुस्तकें :-

1. भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज – राममूर्ति त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2006, मूल्य 500 रु.
2. काव्यशास्त्र के मानदण्ड – रामनिवास गुप्ता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2014, मूल्य 395 रु.
3. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत – गणपतिचन्द्र गुप्त, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018, मूल्य 360 रु.
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – अधुनातन संदर्भ, सत्यदेव मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2016, मूल्य 500 रु.
5. भारतीय काव्यशास्त्र – भागीरथ मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2010, मूल्य 125 रु.
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र - देवेन्द्रनाथ शर्मा, नॅशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
7. भारतीय काव्यशास्त्र की पहचान – डॉ. संदीप रणभिरकर, कल्पना प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2019, मूल्य 595

Course code	MAH 531
Course Name:	रचनात्मक लेखन (AEC)
Credit, Mode:	2, LTP : 2+1+4
Course Objectives: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में कार्य करने हेतु सक्षम बनाना है इस प्रश्न पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों की रचनात्मक लेखन के प्रति समझ विकसित होगी विद्यार्थी कहानी लेखन, कविता लेखन, निबंध लेखन, उपन्यास लेखन आदि के स्वरूप एवं कारक तत्वों से अवगत हो पाएंगे इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य है रचनात्मक लेखन प्रविधि का छात्रों को ज्ञान प्रदान कर उन्हें लेखन में निपुण बनाना	
Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी इस बात से अवगत हो सकेंगे कि सामान्य लेखन और रचनात्मक लेखन में क्या अंतर होता है विद्यार्थी कहानी, निबंध, कविता, उपन्यास, नाटक आदि के लेखन की बारीकियों को जान पाएंगे वे सफलतापूर्वक साहित्य की विविध विधाओं में लेखन करने में सक्षम हो पाएंगे	
Course Details:	
इकाई 1 : कविता लेखन, कहानी लेखन, उपन्यास लेखन (5L)	
इकाई 2 :- लघुकथा, नाटक लेखन, निबंध लेखन (5L)	
इकाई 3: - कविता, कहानी, निबंध, नाटक, उपन्यास आदि के लेखन की प्रायोगिक तैयारी करवाकर विद्यार्थियों के लेखन कौशल को विकसित करना (20L)	
संदर्भ पुस्तकें :-	
<ol style="list-style-type: none">1. कहानी की रचना प्रक्रिया – परमानंद श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2012, मूल्य 450 रु.2. रचनात्मक लेखन – सुरेश गौतम, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, सं. 2008, मूल्य 1303. सृजनात्मक लेखन – हरीश अरोड़ा, युवा साहित्य चेतना मंडल, नई दिल्ली, सं. 2014, मूल्य 8954. उपन्यास की संरचना – गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, सं. 2006, मूल्य 650	

Course code	HIN 511
Course Name:	हिंदी नाटक और रंगमंच
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी नाटक के उदय और परम्परा से परिचित करवाना है। रंग मंचके निर्माण, रंग मंचीय रचना विधान से परिचित करवाना। संस्कृत नाटकों, भारतेन्दु युगीन नाटकों, द्विवेदी युगीन नाटकों और प्रसाद युगीन नाटकों की पृष्ठभूमि और नाटककारों के रचना कौशल से अवगत करवाना है। साथ ही परम्परागत और व्यावसायिक नाट्यकर्म के साथ साथ आधुनिक रंगमंच के विकास की परिधि से अवगत करवाना है।	
Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी व्यावसायिक, अव्यवसायिक रंगमंच और लोक नाट्यों के रचना विधान को समझ सकेंगे। समकालीन रंगमंच, अभिनय कला, भारतेन्दु युगीन नाटकों, द्विवेदी युगीन नाटकों और प्रसाद युगीन नाटकों से उत्पन्न सामाजिक चेतना से परिचित हो सकेंगे। पात्र-परिकल्पना के पीछे छिपी नाटककार की दृष्टि तथा पात्रों के माध्यम से व्यक्त हुई मानवीय मूल्यों से परिचित हो सकेंगे।	
Course Details:	
इकाई 1 : आरंभिक काल - हिंदी नाटक और रंगमंच, नाटक के विकास के चरण, भारतेन्दु हरिश्चंद्र : अंधेर नगरी (15 L)	
इकाई 2 : हिंदी रंगमंच का इतिहास – हिंदी रंगमंच के विभिन्न रूपों का विकास, जयशंकर प्रसाद : चन्द्र गुप्त, ध्रुवस्वामिनी (15 L)	
इकाई 3 :- मोहन राकेश का 'आषाढ़ का एक दिन' तथा धर्मवीर भारती का 'अंधायुग' (15 L)	
इकाई 4:- प्रमुख नाट्य रचनाकार - शंकर शेष - एक और द्रोणाचार्य, उपेन्द्र नाथ अशक - अंजो दीदी, लक्ष्मी नारायण लाल - सिन्दूर की होली (10 L)	
संदर्भ पुस्तकें :-	
<ol style="list-style-type: none"> 1. रंग दस्तावेज सौ साल (दो खंड)- महेश आनंद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2007, मूल्य 2500 रु. 2. नाट्य शास्त्र विश्वकोश (चार भाग), राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1999, मूल्य 4000 रु. 3. हिन्दी दशरूपक -डॉ. भोला शंकर व्यास, चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, संस्करण 2015, मूल्य 160 रु. 4. काव्य के रूप- गुलाबराय, आत्माराम एंड संस, दिल्ली, संस्करण 2012, मूल्य 170 रु. 5. हिंदी नाटक और रंगमंच : नई दिशाएं, नए प्रश्न - गिरीश रस्तोगी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1999, मूल्य 35 रु. 6. मोहन राकेश और उनके नाटक - गिरीश रस्तोगी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2008, मूल्य 65 रु. 7. हिंदी नाटक का आत्म संघर्ष - गिरीश रस्तोगी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2008, मूल्य 100 रु. 8. हिंदी नाटक- बच्चन सिंह, राधाकृष्ण, नई दिल्ली, संस्करण 2015, मूल्य 95 रु. 9. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास- बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1996, मूल्य 140 रु. 10. हिंदी आलोचना का विकास - मधुरेश सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2015, मूल्य 120 रु. 	

Course code	HIN 512
Course Name:	कथेतर गद्य
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस प्रश्नपत्र में हिंदी गद्य के विभिन्न रूपों का परिचय एवं अध्ययन कराया जाएगा। इसमें निबंध, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रिपोर्टाज, यात्रा-वृतांत एवं पत्र साहित्य जैसी विधाओं से विद्यार्थियों को परिचित कराया जाएगा। इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य हिंदी की अन्य गद्य विधाओं के प्रति विद्यार्थियों में रुचि उत्पन्न करते हुए उसके विकास क्रम को दर्शाना है।	
Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी हिंदी गद्य के विभिन्न रूपों को समझ सकेंगे। कथात्मक एवं कथेतर गद्य से अवगत हो पाएंगे। निबंध, संस्मरण, रिपोर्टाज, यात्रावृत्त, आत्मकथा, जीवनी आदि विधाओं के तत्व, विशेषताओं एवं पारस्परिक अंतर को समझ पाएंगे। अकाल्पनिक गद्य विधाओं की आवश्यकता एवं वर्तमान परिवेश में उनकी प्रासंगिकता से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगे।	
Course Details:	

<p>इकाई 1 : निबंध - भारतेन्दु हरिश्चंद्र-भारत वर्षान्ति कैसे हो सकती है, बालकृष्ण भट्ट- शिव शम्भू के चिट्ठे , अध्यापक पूर्ण सिंह - मजदूरी और प्रेम, महावीर प्रसाद द्विवेदी-कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता, रामचंद्र शुक्ल-कविता क्या है, हजारी प्रसाद द्विवेदी-नाखून क्यों बढ़ते हैं, विद्यानिवास मिश्र - मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (15 L)</p> <p>इकाई 2 : आत्मकथा एवं जीवनी – मन्नू भंडारी -एक कहानी यह भी या तुलसीराम-मुर्दहिया, विष्णु प्रभाकर-आवारा मसीहा (15 L)</p> <p>इकाई 3: - संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा-वृत्तांत - महादेवी वर्मा- अतीत के चलचित्र, अज्ञेय-अरे यायावर रहेगा याद (15 L)</p> <p>इकाई 4:- - रिपोर्टाज एवं व्यंग्य - धर्मवीर भारती -जमालपुर और तदुपरांत, हरिशंकर परसाई -भोलाराम का जीव (10 L)</p>
<p>संदर्भ पुस्तकें :-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. हिंदी गद्य: इधर की उपलब्धियां – पुष्पपाल सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2019, मूल्य 250 रु. 2. आधुनिक हिंदी गद्य-साहित्य का विकास और विश्लेषण – विजय मोहन सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, सं. 2015, मूल्य 280 रु. 3. हिंदी गद्य: विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018, मूल्य 400 रु. 4. हिंदी का आत्मकथात्मक साहित्य – चम्पा श्रीवास्तव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2019, मूल्य 400 रु. 5. हिंदी का गद्य साहित्य – डॉ. रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, सं. 2015, मूल्य 800 रु.

Course code	HIN 515
Course Name:	लघु शोध परियोजना
Credit, Mode:	8, LTP : 0+0+16
<p>Course Objectives: विद्यार्थियों में शोध कार्य विषयक रुचि निर्माण करने हेतु तथा उन्हें शोध कार्य में सक्रिय करने हेतु लघु शोध प्रबंध लेखन को चतुर्थ सत्र में अनिवार्य किया गया है इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को उनके द्वारा चयनित विषय पर एक लघु शोध प्रबंध का लेखन करना होगा इस कार्य में विद्यार्थियों के मार्गदर्शन के लिए सभी अध्यापकों को छात्र आर्बटिट किए जायेंगे इसका उद्देश्य छात्रों की शोध दृष्टि को विकसित करना है </p>	
<p>Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी हिंदी में शोधकार्य करने हेतु सक्षम बन पाएंगे अपने रुचि के क्षेत्र में शोध कार्य कर छात्र अपनी बौद्धिकता एवं चिंतानात्मकता को विकसित कर पाएंगे भविष्य में शोधकार्य करने हेतु यह पाठ्यक्रम सहायक साबित होगा </p>	
<p>Course Details:</p>	
<p>इकाई 1 : छात्र अपने चयनित विषय का विविध अध्यायों में विभाजन कर अपने शोध निर्देशक के मार्गदर्शन में इसी सत्र में शोधकार्य को पूर्ण कर उसकी सजिल्द प्रति विभाग में जमा करवाकर मौखिकी परीक्षा की तैयारी करेगा </p>	

Course code	HIN 551
Course Name:	कार्यालयीन हिंदी
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
<p>Course Objectives: हिंदी के प्रयोजन मूलक रूप का परिचय विद्यार्थियों को करवाकर हिंदी की विभिन्न प्रयुक्ति क्षेत्रों का परिचय सोदाहरण देना प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोग ,पत्र लिखने की पद्धतियों का ज्ञान ,प्रेस विज्ञापन ,प्रेस नोट आदि की जानकारी ,कार्यालय के समस्त पत्राचारों का परिचय इसमें दिया जाएगा </p>	
<p>Learning outcome: कार्यालयीन हिंदी के अध्ययन से कार्यालय की पारिभाषिक ,तकनिकी शब्दावलियों का ज्ञान प्राप्त होगा, साथ साथ मसौदा लेखन ,टिप्पण लेखन कार्यालयीन समस्त पत्राचारों को लिखने की पद्धतियाँ , कलेवर,नमूना बनाने की प्रक्रिया के ज्ञान के साथ साथ अंग्रेजी एवं हिंदी कार्यालयीन शब्दों का बोध होगा अधिसूचना ,टिप्पणी का प्रयोग टिप्पणियों के प्रकार देकर कार्यालयीन हिंदी के क्षेत्र में विद्यार्थियों का ज्ञान बढ़ाना इस पत्र की विशेषता है कि भविष्य में कार्यालयी हिंदी के ज्ञान से वे हिंदी अधिकारी हिंदी टंकक ,हिंदी अनुवादक ,आशु अनुवादक आदि पदों को प्राप्त करने में सफल होंगे </p>	
<p>Course Details:</p>	

<p>इकाई 1 : कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप और क्षेत्र, कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप और क्षेत्र, सरकारी पत्राचार – प्रकार, प्रयोग, स्वरूप मसौदा लेखन – सामान्य सिद्धांत, अनुदेश और मसौदा लेखन अभ्यास (15 L)</p> <p>इकाई 2 : पत्र प्रकार, पावती अंतरीम उत्तर, स्मरण पत्र, आवेदन पत्र, प्रतिवेदन, अर्धसरकारी पत्र, कार्यालय आदेश (10 L)</p> <p>इकाई 3 : पृष्ठांकन और कार्यक्रम, कार्यालय ज्ञापन स्वीकृति, कार्यालय ज्ञापन अनुमति, कार्यालय ज्ञापन अनुशासनिक, कार्यालय ज्ञापन सरकारी, अधिसूचना, संकल्प, परिपत्र, सामान्य आदेश, स्वीकृति पत्र, नये पदों का सृजन, वित्तीय मंजूरी (15 L)</p> <p>इकाई 4:- टिप्पणी लेखन – सामान्य सिद्धांत, प्रकार, सहायक और अधिकारी स्तर की टिप्पणी, टिप्पणी लेखन – अभ्यास, सहायक स्तर की टिप्पणियाँ, अधिकारी स्तर की टिप्पणियाँ, अनुशासनिक कार्रवाई, अनुशासनिक अन्तर्विभागीय टिप्पणी, बैठकों समितियों का आयोजन, कार्यसूची, कार्रवाई, कार्यवृत्त, संसद कार्य, संसद प्रश्न, उत्तर का मसौदा अनुपूरक प्रश्नों की टिप्पणियाँ, सार लेखन, अभ्यास-पत्राचार के आधार पर, टिप्पणियों के आधार पर विनियमों के आधार पर (15 L)</p>
<p>संदर्भ पुस्तकें :-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. कार्यालय क्रियाविधि – चिरंजीलाल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 2. सरकारी कार्यालय में हिंदी का प्रयोग – गोपीनाथ श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 3. प्रशासनिक हिंदी निपुणता, हरिबाबू कंसल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 4. कार्यालयीन हिंदी, ठाकुरदास, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली 5. प्रयोजनमूलक हिंदी, विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

Course code	HIN 552
Course Name:	तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
<p>Course Objectives: (संस्कृत, तेलगु, बंगला, उड़िया, मराठी, भाषाओं की हिन्दी में अनुदित कृतियों के विशेष संदर्भ में)</p> <p>इस प्रश्नपत्र में विद्यार्थियों को तुलनात्मक साहित्य का परिचय और अन्य भाषाओं से हिन्दी में अनुदित रचनाओं को पढ़ाया जायेगा। बंगला, उड़िया, मराठी, राजस्थानी और उर्दू भाषाओं के साहित्यिक कालविभाजन की संक्षिप्त जानकारी दी जाएगी और साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन सीखना इस प्रश्नपत्र का मूल उद्देश्य है।</p>	
<p>Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी तुलनात्मक साहित्य क्या है, यह किस प्रकार दो भाषा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है इससे अवगत हो सकेंगे किन्हीं भी दो भाषा के साहित्य (कविता, कहानी, उपन्यास) की किसी भी विधा में किस प्रकार से तुलना की जा सकती है यह जानकारी प्राप्त कर सकेगा भारतीय साहित्य विशेष (ओडिया, बंगला, मराठी, राजस्थानी, उर्दू) के इतिहास की जानकारी प्राप्त कर सकेगा </p>	
Course Details:	
<p>इकाई 1 : तुलनात्मक साहित्य परिचय और अनुवाद - तुलनात्मक साहित्य का परिचय, अवधारणा, विकास और विविध संप्रदाय, तुलनात्मक साहित्य अध्ययन के विविध प्रविधि और समस्याएं, तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का संक्षिप्त परिचय (15 L)</p>	
<p>इकाई 2 : तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के आयाम -1 (भारतीय साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय), तमिल, संस्कृत, बांग्ला और उड़िया साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय, मराठी, तेलगु साहित्य के काल विभाजन का संक्षिप्त परिचय (10 L)</p>	
<p>इकाई 3: तुलनात्मक साहित्य अध्ययन के आयाम-2 (कविता के क्षेत्र में), काव्य प्रयोजन, काव्य के रूप और कविता का ज्ञान, साहित्य का 'ये किसका लहू है?' नज़्म/कविता, जीवनानंद दास की कविता 'बेला अबेला काल बेला' (माघ संक्रांति की रात, सूर्य नक्षत्र नारी), विजयदान देथा की कविता (15 L)</p>	
<p>इकाई 4:- तुलनात्मक साहित्य अध्ययन के आयाम- 3 (कहानी, उपन्यास और नाटक के क्षेत्र में), कथ्य मीमांसा, कथ्य अभिग्रहण, रवीन्द्रनाथ टैगोर की कहानी 'त्याग' और 'व्यवधान', उपन्यास, नाटक, पाठ्यक्रम के अनुसार दो भाषाओं के कविता, कहानी और उपन्यास के आधार पर तुलना करना, कविता की कविता से, कहानी की कहानी से, उपन्यास की उपन्यास से (15 L)</p>	
<p>संदर्भ पुस्तकें :-</p>	

1. तुलनात्मक साहित्य-डॉ. नगेन्द्र (सं.), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1985
2. तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य-इंद्रनाथ चौधुरी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, 300 रु
3. तुलनात्मक साहित्य सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य, हनुमान प्रसाद शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, 2015, 495 रु
4. तुलनात्मक अध्ययन: स्वरूप और समस्याएं, डॉ. भ.ह. राजूकर, डॉ. राजमल बोरा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, 200 रु
5. Comparative Literature : Theory and Practice- Amiya Dev & Sisir Kumar Das, Indian Institute of Advanced Study in association with Allied Publishers, New Delhi, 1989
6. A Comparative Perspective on Literature, Approaches to Theory and Practice, Edited Clayton Koelb and Susan Noakes, Cornell University Press, New York, USA, 1988
7. Death of a Discipline – Gayatri Chakravorty Spivak, Columbia University Press, 2005, 1517.59 रु

Course Code	HIN 553
Course Name:	भारतीय उपन्यास
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: विभिन्न भारतीय उपन्यासों के अध्ययन से बहुभाषा समुदाय भारत की विराट उज्ज्वल सनातन भारतीय सांस्कृतिक, राष्ट्रीय परिवेश का बोध करवाना, विभिन्न भाषाओं के उपन्यासकारों के रचना वैशिष्ट्य से परिचय करवाना, टैगोर जैसे बहुमुख प्रतिभाशाली की रचनात्मक शैली, राष्ट्रीयता, उपन्यासकालीन परिस्थितियों से अवगत कराना, अंत में उपन्यासों के अध्ययन के माध्यम से प्राप्त भिन्नता में प्राप्त एकता एवं भारतीयता की महिमा को अवगत कराना।	
Learning outcome: भारत के विभिन्न प्रदेशों की जानकारी, वहां प्राप्त भारतीय साहित्य की विस्तृत जानकारी मिलेगी जिससे विद्यार्थियों के मन में उदार भावनाओं का जन्म होकर संकीर्णताएँ मिट जायेगी। विराट साहित्य के विस्तृत पटल पर विभिन्न प्रकार के लेखकों की कृतियों का अध्ययन का सुअवसर मिलेगा। विभिन्न भाषा के साहित्यकारों के भाषा कौशल, वर्णन शैली, उद्देश्य, देशभक्ति भाव आदि का ज्ञान मिलेगा जिससे उन्हें सम्पूर्ण भारतीय साहित्य का अध्ययन करने का सुअवसर मिलेगा, व्यापक विचारों से विस्तृत ज्ञान से लाभान्वित होंगे।	
Course Details:	
इकाई 1: भारतीय उपन्यास का उद्भव और विकास, भारतीय उपन्यास के उदय की पृष्ठभूमि, भारत में उपन्यास का विकास और विविध रूप (15 L)	
इकाई 2: प्रमुख उपन्यासों का अध्ययन-1- वेयिपगळु - विश्वनाथ सत्यनारायण, आंगलियात - जोसफ मेकवान, उमराव जान अदा-मिर्जा हादी रूस्वा (10 L)	
इकाई 3: प्रमुख उपन्यासों का अध्ययन-2 - ययाति-विष्णु सखाराम खांडेकर, गोरा-रवीन्द्रनाथ ठाकुर (15 L)	
इकाई 4: प्रमुख उपन्यासों का अध्ययन-3 - मछुआरे-तकषी शिवशंकर पिल्लई (15 L)	
संदर्भ पुस्तकें :-	
<ol style="list-style-type: none"> 1. उपन्यास का उदय-आयन वाट, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़। 2. उपन्यास और लोकजीवन-राल्फ फॉक्स, पी.पी.एच, नई दिल्ली। 3. उपन्यास का सिद्धांत-जार्ज लुकाच, मैकमिलन इंडिया, लिमिटेड, नई दिल्ली। 4. भारतीय साहित्य : स्थापनाएं एवं प्रस्तावनाएं, के. सच्चिदानंदन, राजकमल, नई दिल्ली। 5. Novel in India, T.W. Clark 6. Realism and Reality- Minakshi Mukherji 	

Course code	HIN 554
Course Name:	हिंदी का स्त्रीवादी साहित्य
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: हिंदी साहित्य में पुरुष रचनाकारों के साथ-साथ गुणवत्ता एवं परिमाण दोनों दृष्टियों से उत्कृष्ट लेखन कर रही हैं, अतः स्त्री लेखन के विविध आयामों से विद्यार्थियों को अवगत कराना ही इस प्रश्नपत्र का प्रधान उद्देश्य है। साथ ही स्त्री लेखन में स्त्री समस्याओं के साथ-साथ अन्य सामाजिक सरोकारों का भी किस प्रकार चित्रण किया जा रहा है यह भी इस पाठ्यक्रम के जरिए जाना जा सकेगा। विद्यार्थी को स्त्री लेखन की भारतीय एवं पाश्चात्य परम्परा से अवगत कराया जाएगा।	
Learning outcome: इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से विद्यार्थी स्त्री विमर्श की विविध संकल्पनाओं को समझ सकेगा। हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में लिखे गए स्त्री साहित्य का अध्ययन कर सकेगा। स्त्री लेखन के अध्ययन से विद्यार्थी स्त्री दृष्टि से भारत के सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन में सक्षम हो पायेगा। इससे उसके भीतर एक नूतन भावबोध विकसित होगा। विद्यार्थी स्त्री रचनाधर्मिता एवं पुरुष रचनाधर्मिता में अंतर कर पायेगा।	
Course Details:	
इकाई 1: स्त्रीवाद का सैद्धांतिक पक्ष - स्त्रीवाद: पाश्चात्य एवं भारतीय अवधारणा एवं स्वरूप, प्रमुख स्त्रीवादी आन्दोलन, हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श (15 L)	
इकाई 2: हिंदी स्त्री कहानी लेखन सामान्य परिचय - हरी बिंदी – मृदुला गर्ग, खुदा की वापसी – नासिरा शर्मा, फैसला – मैत्रेयी पुष्पा, बावजूद इसके – चित्रा मुद्गल, जांच अभी जारी है – ममता कालिया, रहोगी तुम वही – सुधा अरोड़ा (15 L)	
इकाई 3: हिंदी के महिला उपन्यासकार एवं उपन्यास - पचपन खम्भे लाल दीवारें – उषा प्रियंवदा, स्त्री आत्मकथा साहित्य का परिचय - प्रभा खेतान -अन्या से अनन्या (10 L)	
इकाई 4: हिंदी की प्रमुख कवयित्रियाँ – एक परिचय - मीरां (चयनित 10 पद), सुभद्राकुमारी चौहान (झांसी की रानी, मेरा नया बचपन), महादेवी वर्मा (मैं नीर भरी दुःख की बदली), अनामिका (स्त्रियाँ) (15 L)	
संदर्भ पुस्तकें :-	
<ol style="list-style-type: none"> 1. औरत अस्तित्व और अस्मिता, अरविन्द जैन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2019, मूल्य 495 रु. 2. भारतीय नारी संत परम्परा, बलदेव वंशी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2011, मूल्य 250 रु. 3. स्त्री लेखन: स्वप्न और संकल्प – रोहिणी अग्रवाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2014, मूल्य 795 रु. 4. भविष्य का स्त्री विमर्श – ममता कालिया, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2019, मूल्य 350 रु. 5. स्त्री विमर्श का लोकपक्ष – अनामिका, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2019, मूल्य 595 रु. 6. सं. संदीप रणभिरकर, स्त्री सृजनात्मकता का स्त्री पाठ, कल्पना प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2016, मूल्य 1195 रु. 	

Course code	HIN 555
Course Name:	अनुवाद सिद्धांत व व्यवहार
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार पाठ्यक्रम का उद्देश्य अनुवाद की अवधारणा, विकास एवं सिद्धांत का परिचय, अनुवाद के लिए आवश्यक यंत्रों तकनीकों एवं कौशल का परिचय, अनुवाद के विभिन्न प्रकारों एवं नवीनतम परिवर्तनों की जानकारी देना अनुवाद की परिभाषाएं, उसकी महिमा का बोध कराना। अंग्रेजी एवं हिंदी के ज्ञान को समानांतर रूप से अवगत कराना। विदेशी विद्वान् कैट फोर्ड, जूलियाना हाऊस, कसानग्रेदे जैसे विद्वानों के सिद्धांतों का अध्ययन करवाना।	

Learning outcome:

अनुवाद के विभिन्न प्रकारों की चर्चा करते हुए अनुवाद क्षेत्र में विद्यार्थियों को प्रवीण बनवाना | हिंदी के अलावा अंग्रेजी का ज्ञान भी बढ़ेगा जिससे आसानी से नौकरियां मिलेगी | दोनों भाषाओं की पारिभाषिक शब्दावलियों की जानकारी मिलेगी | कई पद बंधों ,उपन्याओं ,कहानियों का अनुवाद करने की क्षमता बढ़ेगी |

Course Details:

इकाई 1 : अनुवाद अध्ययन का इतिहास - अनुवाद अवधारणा एवं स्वरूप, अनुवाद के प्रकार, महत्व, अनुवाद की प्रक्रिया, भाषिक विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन (15 L)

इकाई 2 : अनुवाद सिद्धांत- पुनरीक्षण स्वरूप एवं प्रक्रिया, वाक्य रचना का प्रश्न, अनुवाद की समस्याएँ, अनुवादक के गुण, अनुवाद के विविध सिद्धांत, समतुल्यता एवं अन्य अवधारणाएँ (15 L)

इकाई 3: अनुवाद के औजार, शब्दकोश की भूमिका, पारिभाषिक शब्दावली की समस्या, मशीनी अनुवाद/ कंप्यूटर अनुवाद (10 L)

इकाई 4:- विशेषीकृत अनुवाद, साहित्यिक अनुवाद, साहित्येतर अनुवाद (15 L)

1. संदर्भ पुस्तकें :- अनुवाद कला-डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
2. अनुवाद का भाषिक सिद्धांत-जे.सी. कैटफोर्ड
3. अनुवाद विज्ञान सिद्धांत एवं अनुप्रयोग-नगेन्द्र
4. अनुवाद : सिद्धांत और प्रयोग-जी. गोपीनाथन
5. वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ-भोलानाथ तिवारी
6. पश्चिम में अनुवाद कला के मूल स्रोत-डॉ. गार्गी गुप्त, विश्वनाथ गुप्त

Course code	HIN 556
Course Name:	मीडिया विमर्श: सिद्धांत और अनुप्रयोग
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: जनसंचार और पत्रकारिता का यह परिचयात्मक प्रश्नपत्र है जिसके उद्देश्य हैं-संचार की अवधारणा एवं सिद्धांतों का परिचय, भारत में जनसंचार माध्यमों के विकास का परिचय एवं संचार माध्यमों के प्रबंधन और आर्थिक पक्ष एवं नवीनतम परिवर्तनों की जानकारी देना ।	
Learning outcome: इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी मीडिया का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक अध्ययन कर पाने में सक्षम होगा समाचार लेखन एवं पत्रकारिता के विविध आयामों से विद्यार्थी अवगत हो पायेगा वर्तमान परिवेश में जनसंचार की भूमिका स्पष्ट हो जाएगी जनसंचार में कैरियर निर्माण हेतु विद्यार्थी आवश्यक जानकारियाँ जुटा पाएंगे मीडिया की सम्यक जानकारी छात्रों के लिए अत्यंत हितकारी होगी	
Course Details:	
इकाई 1: मीडिया विमर्श : सैद्धांतिक विवेचन - जनसंचार का अवधारणा, प्रक्रिया और सिद्धांत, भारत में जनसंचार माध्यमों का विकास, लोकतंत्र और जनसंचार माध्यम (15 L)	
इकाई 2: जनसंचार प्रौद्योगिकी और चुनौतियाँ, प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम, समाचार के तत्व, विशेषताएँ, समाचार के स्रोत, समाचार लेखन के प्रमुख सिद्धांत (15 L)	
इकाई 3: जनसंचार और समाज, विकासमान पत्रकारिता, विकासशील समाज में जनसंचार की भूमिका, सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख कारक, जनसंचार में कैरियर निर्माण (10 L)	
इकाई 4: जनसंचार हिंदी और बाजार - जनसंचार और हिंदी, हिंदी भाषा की संरचना, हिंदी का मानकीकरण, मीडिया की आर्थिकी, संस्कृति और बाजारवाद का बदलता स्वरूप (15 L)	
संदर्भ पुस्तकें :-	

1. समाचार लेखन – पी. के. आर्य, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2016, मूल्य 250 रु.
2. मीडिया लेखन – सुमित मोहन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2019, मूल्य 250 रु.
3. मीडिया और बाजारवाद – सं. रामशरण जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2019, मूल्य 350 रु.
4. आधुनिक विज्ञापन – प्रेमचंद पातंजलि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018, मूल्य 200 रु.
5. मीडिया हूँ मैं – जयप्रकाश त्रिपाठी, अमन प्रकाशन, कानपुर, सं. 2014, मूल्य 550 रु.

Course code	HIN 557
Course Name:	हिंदी का अस्मिता मूलक साहित्य
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य अस्मितामूलक साहित्य की पहचान करवाना है। राष्ट्रीय स्तर पर नवीन विमर्शों के उदय के कारणों और परिणाम स्वरूप साहित्य सर्जन की पहचान करवाना है। इस पाठ्यक्रम के आधार पर विद्यार्थी समकालीन विमर्शों की पृष्ठभूमि से अवगत हो सकेंगे। साहित्य के क्षेत्र में आये परिवर्तन और उनके कारकों की पहचान करवाना प्रमुख ध्येय है।	
Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी अस्मितामूलक साहित्य के सौंदर्यशास्त्र को समझ सकेंगे। स्त्रीवादी, दलित, किन्नर, वृद्ध और किसानों की समस्याओं को समझ सकेंगे साथ ही विविध विमर्शों के सौंदर्यशास्त्र को जान सकेंगे। समाज में प्रचलित स्त्री, दलित, किन्नर सम्बन्धी खोखली मान्यताओं एवं उनके जीवन को अभिशप्त बनाने वाले धर्मग्रन्थों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।	
Course Details:	
इकाई 1: विविध विमर्श अवधारणा एवं स्वरूप :- स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श, किसान विमर्श, वृद्ध विमर्श तथा अन्य विमर्श (10L)	
इकाई 2: स्त्री विमर्श :- कविता - नागार्जुन- पाषाणी प्रतिमा, अनामिका -बेजगह, आलोक धन्वा- घर से भागी हुई लडकियां, कात्यायनी- सात भाइयों के बीच चम्पा, निर्मला पुतल - घर की तलाश (10L)	
इकाई 3: दलित विमर्श :- मोहनदास नैमिशराय- अपना गाँव, जय प्रकाश कर्दम -नोबार, अनीता भारती -एक थी कोटे वाली आदिवासी विमर्श :- रणेंद्र - 'ग्लोबल गाँव का देवता' उपन्यास का सामान्य परिचय (10L)	
इकाई 4: अन्य विमर्श : किन्नर विमर्श :-चित्रा मुद्गल - 'पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपारा' उपन्यास का सामान्य परिचय, किसान विमर्श संजीव - 'फांस' उपन्यास का सामान्य परिचय, वृद्ध विमर्श : यशपाल-समय, भीष्म साहनी -खून का रिश्ता, सूर्यबाल - निर्वासित (20L)	
संदर्भ पुस्तकें :-	
<ol style="list-style-type: none"> 1. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र -ओमप्रकाश वाल्मीकि -राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2014, मूल्य 60 रु. 2. सौंदर्यशास्त्र - डॉ. ममता चतुर्वेदी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, संस्करण, 2015, मूल्य 145 रु. 3. धर्म और धर्म सत्ता - राजकिशोर (संपा.)वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 2015, मूल्य 150 रु. 4. आदिवासी साहित्य विधा : शास्त्र और इतिहास- डॉ.बापुराव देसाई, गरिमा प्रकाशन, संस्करण: 2013, मूल्य 300 रु. 5. आदिवासी दुनिया, हरिराम मीणा- नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, संस्करण: 2012, मूल्य 150रु. 	

Course code	HIN 558
Course Name:	हिंदी का प्रवासी साहित्य
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0

<p>Course Objectives: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य प्रवासी हिंदी साहित्य की पहचान करवाना है। विदेशों में भी किस प्रकार हिंदी साहित्य की विविध विधाओं किस प्रकार साहित्य की सृष्टि हो रही है इसका विद्यार्थियों को परिज्ञान कराना ही इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है। इस पाठ्यक्रम के आधार पर विद्यार्थी प्रवासी जीवन की विविध समस्याओं से अवगत सकेंगे।</p>
<p>Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी प्रवासी साहित्य के सौंदर्यशास्त्र को समझ सकेंगे। विदेशी पृष्ठभूमि में देशी मन की सुन्दर अभिव्यक्ति से जुड़ सकेंगे। प्रवासी जीवन के चलते मानव जीवन में आए बदलाव को जान सकेंगे। देश-विदेश का कल्चरल शॉक, विस्थापन की पीड़ा, संस्कृतियों की टकराहट, आधुनिकता एवं परंपरा का द्वंद्व आदि को समझ पाएंगे। साथ ही हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्य के महत्त्व एवं स्थान को सुनिश्चित कर सकेंगे।</p>
<p>Course Details:</p> <p>इकाई 1 : प्रवासी हिंदी साहित्य - अवधारणा एवं सामान्य परिचय (15L)</p> <p>इकाई 2 :- प्रवासी हिंदी उपन्यास साहित्य – सामान्य परिचय, लौटना – सुषम बेदी (10L)</p> <p>इकाई 3: प्रवासी हिंदी कहानी साहित्य – सामान्य परिचय, अभिमन्यु अनंत - अब कल आयेगा यमराज, उषा राजे सक्सेना - मेरे अपने, तेजेंद्र शर्मा- मुझे मार डाला बेटा, अर्चना पेन्यूली- मीरा बनाम सिल्विया, सुदर्शना प्रियदर्शनी –अखबार, जकिया जुबैरी -सांकल, सुधा ओम ढींगरा- कमरा नं. 103 (15L)</p> <p>इकाई 4:- प्रवासी हिंदी काव्य एवं अन्य विधाएँ – सामान्य परिचय, प्रवासी हिंदी काव्य एवं अन्य विधाएँ – सामान्य परिचय, सत्येन्द्र श्रीवास्तव - सर विल्सन चर्चिल मेरी मां को जानते थे, अचला शर्मा – परदेस में बसंत की आहट, अंजना संधीर- धुप, छाँव और आँगन, वेद प्रकाश 'वटुक'- बंधन अपने देश पराया, (15L)</p>
<p>संदर्भ पुस्तकें :-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. हिंदी का प्रवासी साहित्य - डॉ. कमल किशोर गोयनका, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, सं. 2011, मूल्य 500 रु. 2. हिंदी के यूरोपीय विद्वान: व्यक्तित्व एवं कृतित्व – मुरलीधर श्रीवास्तव, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, सं. 2018 3. प्रवासी लेखन: नई जमीन, नया आसमान – अनिल जोशी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली सं. 2019, मूल्य 895 रु. 4. ब्रिटेन में हिंदी रचनाकार – सं. राधाकान्त भारती, स्टार पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, सं. 2013, मूल्य 200 रु.

Course code	HIN 559
Course Name:	विशेष अध्ययन: मीरां
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
<p>Course Objectives: इस प्रश्नपत्र में विद्यार्थियों को मीरां के अध्ययन के अंतर्गत उनके संपूर्ण कृतित्व तथा उनके योगदान से अवगत कराया जाएगा। इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य है मीरां द्वारा रचित साहित्य, उनकी दृष्टि, युगीन स्थितियों तथा उनकी वैचारिकता को समझना। मीरां के लेखन के विविध आयामों का विवेचन भी इस प्रश्नपत्र के माध्यम से किया जाएगा।</p>	
<p>Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी मध्यकालीन काव्य के प्रति अपनी समझ को विकसित कर पायेगा। कृष्णभक्त काव्य परंपरा में मीरां के योगदान को सुनिश्चित कर पाएंगे। मीरां द्वारा रचित पदों का समीक्षात्मक अध्ययन। मीरां की भक्ति, प्रेम-भावना, अध्यात्म एवं मीरां का काव्य-शिल्प आदि का विवेचन कर पाएंगे। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मीरां की प्रासंगिकता को स्पष्ट कर पाएंगे। भक्तिकाल में मीरां के योगदान एवं महत्त्व से अवगत हो सकेंगे।</p>	
<p>Course Details:</p> <p>इकाई 1: मीरां का व्यक्तित्व एवं भक्ति आन्दोलन - मीरां का जीवन-वृत्त, भक्ति आन्दोलन और मीरां, मध्यकालीन परिस्थितियाँ और भक्ति साहित्य, कृष्ण भक्ति काव्यधारा और मीरां (15L)</p> <p>इकाई 2: मीरां द्वारा रचित पदों का समीक्षात्मक अध्ययन - पुरोहित हरिनारायण द्वारा संपादित मीरा वृहत पदावली के चयनित 50 पदों का अध्ययन, (15 L)</p> <p>इकाई 3: मीरां के काव्य के विविध आयाम – I - मीरां की भक्ति भावना, मीरां का दर्शन, मीरां के काव्य की अंतर्वस्तु, मीरां के काव्य में प्रतिरोध की चेतना (10L)</p>	

इकाई 4: मीरां के काव्य के विविध आयाम – II - मीरां के काव्य में आध्यात्म, मीरां के काव्य में वेदनानुभूति, मीरां के काव्य में प्रेम भावना, मीरां का स्त्री विमर्श (15L)
संदर्भ पुस्तकें :-
<ol style="list-style-type: none"> 1. मीराबाई और उनकी पदावली – प्रो. देशराजसिंह भाटी, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2012, मूल्य 100 रु. 2. मीराबाई की संपूर्ण पदावली, सं. रामकिशोर शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 2013, मूल्य 125 रु. 3. मीरा का काव्य, विश्वनाथ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1989, मूल्य 200 रु. 4. मीराबाई, डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर, भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली, सं. 1990,

Course code	HIN 560
Course Name:	विशेष अध्ययन: प्रेमचंद
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य कथा सम्राट प्रेमचंद के रचना कौशल का परिचय देना है। प्रेमचंदयुगीन समाज, उसकी मान्यताओं एवं समाज में व्याप्त वैषम्य से अवगत करवाना है। साहित्यकार की प्रगतिशीलता से परिचित करवाते हुए समाज के प्रति उसकी संवेदनशीलता से भी अवगत करवाना है।	
Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी इस बात से अवगत हो सकेंगे कि प्रेमचंद का कथा साहित्य समतामूल समाज के निर्माण में विशिष्ट भूमिका निभाता है। उनकी कहानियों एवं उपन्यासों के पात्र एवं संवाद शोषण विहीन समाज पर बल देते हैं। स्त्री, मजदूर और किसानों की पीड़ा से पूर्णतया अवगत हो सकेंगे साथ ही इस बात से भी अवगत हो सकेंगे कि प्रेमचंद का कथा साहित्य न केवल मनोरंजन का आधार है, अपितु समाज के बदलाव और परिवर्तन में इसकी महती भूमिका है। उनके पात्रों और उनकी स्थितियों, परस्पर उनके व्यवहार, मनोविज्ञान और प्रदेय को समझ सकेंगे।	
Course Details:	
इकाई 1: प्रेमचंद का व्यक्तित्व एवं हिंदी कथा साहित्य लेखन परंपरा - प्रेमचंद का जीवन-वृत्त, उपन्यास लेखन की प्रेरणाएँ, प्रेमचंद की जीवनियाँ, उर्दू लेखन प्रेमचंद का कथा साहित्य और भारतीय परिवेश, हिंदी कहानी और प्रेमचंद, हिंदी उपन्यास और प्रेमचंद (15L)	
इकाई 2: प्रेमचंद का साहित्यिक विकास - प्रेमचंद का हिंदी कथा साहित्य में प्रवेश, प्रेमचंद का कहानी साहित्य सामान्य परिचय, प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य सामान्य परिचय, प्रेमचंद के साहित्य पर युगीन प्रभाव (15 L)	
इकाई 3: प्रेमचंद के कथा साहित्य के विविध आयाम – प्रेमचंद के कथा साहित्य का किसान आन्दोलन से सम्बन्ध, प्रेमचंद के कथा साहित्य में आर्थिक शोषण की प्रक्रिया, राष्ट्रवाद और प्रेमचंद, प्रेमचंद और दलित, प्रेमचंद और स्त्री, आदर्श और यथार्थ (10L)	
इकाई 4: प्रेमचंद के कथा साहित्य का पाठपरक अध्ययन – प्रेमचंद की कहानी कला, सद्गति, मन्त्र, बड़े घर की बेटी, नमक का दारोगा, ठाकुर का कुआँ, दो बैलों की कथा, प्रेमाश्रम उपन्यास का विशेष अध्ययन (15L)	
संदर्भ पुस्तकें :-	
<ol style="list-style-type: none"> 1. प्रेमचंद युगीन भारतीय समाज - डॉ. इंद्रमोहन कुमार सिन्हा, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, संस्करण 1974, मूल्य 15 रु. 2. प्रेमचंद और भारतीय समाज - नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2017, मूल्य 150 रु. 3. साहित्य और समाज - विजयदान देथा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2014, मूल्य 250 रु. 4. भाषा और समाज - रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2010, मूल्य 210 रु. 5. नई पीढ़ी के लिए गोर्की, प्रेमचन्द, लू शुन - राणा प्रताप, गार्गी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2018, मूल्य 80 रु. 6. संस्कृति के चार अध्याय - रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2016, मूल्य 595 रु. 7. हिन्दी कहानी का विकास - मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 1996, मूल्य 75रु. 	

Course code	HIN 561
Course Name:	विशेष अध्ययन: गुरू जम्भेश्वर

Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: राजस्थान के विद्यार्थियों को अपने क्षेत्र के अब तक साहित्य से परे एक गौण मौन दार्शनिक संत ,पर्यावरण संरक्षक के जीवनीगत ,साहित्यिक परिचय करवाना ,गुरु जम्भेश्वर की वाणी की महिमा ,जीव कारुण्य,प्रकृति प्रेम का परिचय करवाना संत ,दार्शनिक एवं पर्यावरण संरक्षक के रूप में उनका योगदान सविस्तार से अवगत कराना ,भविष्य में ugC की मदद से एक पीठ की स्थापना करने के महती उद्देश्य से इस पत्र का परिचय दिया जा रहा है	
Learning outcome: विद्यार्थी राजस्थान के दार्शनिक संत गुरु जम्भेश्वर की वाणी से परिचित होकर समाज में मानवीय धर्मों को फैलायेंगे ,उनके दार्शनिक विचारों से अवगत हो जायेंगे उनके द्वारा पर्यावरण संरक्षण संबधी विचारों से प्रेरित होकर प्रकृति माँ की सेवा करेंगे पौधों को उगाना ,हरियाली को बचाना ,जल की बचत ,मिट्टी एवं वन्य जंतुओं का संरक्षण आदि सीखकर शान्ति पूर्ण संस्कार युक्त सभ्य समाज का निर्माण करेंगे	
Course Details:	
इकाई 1: हिंदी के संत साहित्य का परिचय : प्रमुख कवि इकाई 2:- हिंदी की बोलियों का परिचय : राजस्थानी के विशेष सन्दर्भ में इकाई 3: राजस्थान के प्रमुख संत कवि एवं दार्शनिक : जम्भेश्वर के विशेष सन्दर्भ में इकाई 4:- जम्भेश्वर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ,पर्यावरण संरक्षक का रूप इकाई 5: उनके कुछ चयनित २० पद : अर्थ सहित	
संदर्भ पुस्तकें :-	
१.जम्भवानी मूल संजीविनी व्याख्या –प्रोफेसर किशाना राम बिशनोय १९९७ –संस्करण प्रथम –GJUST ,हरियाणा प्रकाशन २. जम्भवाणी काव्य कोश - प्रोफेसर किशाना राम बिशनोय १९९७ –संस्करण प्रथम – निर्मल प्रकाशन ,नयी दिल्ली ३. जाम्भोजी की शब्द वाणी –हीरालाल माहेश्वरी – ४. जाम्भोजी की वाणी (द्वितीय संस्करण) – श्री सूर्यशंकर पारीक, विकास प्रकाशन बीकानेर, सन 2008 ५. जम्भसार (भाग प्रथम एवं द्वितीय) – साहबराजजी द्वारा प्रणित, द्वितीय संस्करण, सम्पादक – स्वामी कृष्णानन्दजी आचार्य, प्रकाशक – स्वामी आत्मप्रकाश जिज्ञासु, सन 2002 ६. जाम्भोजी सन्दर्भ – लेखक श्रीकृष्ण विश्वाई, प्रकाशक विश्वाई सेवक, श्री बालाजी, नागौर, द्वितीय संस्करण, जनवरी 2009 ७. श्री जम्भवाणी गुटका – सम्पादक डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, प्रकाशक श्री गुरु जम्भेश्वर साहित्य सभा (रजि.), श्री जम्भेश्वर मन्दिर, अबोहर, प्रथम संस्करण, 2011	

Course code	HIN 562
Course Name:	आधुनिक भारतीय कविता
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: आधुनिक भारतीय साहित्य का परिचय करवाना ,नयी कविता ,साठोत्तरी कविता का विकास उत्तर एवं दक्षिण में आदि की जानकारी देना ,आधुनिक भारतीय कवियों के अंतर्गत ८ चयनित कवितों की कविताओं से अवगत कराना ,राष्ट्रीयकविताओं में व्यक्त देश भक्ति को उजागर करवाना ,सामाजिक मूल्यों की स्थापना कविताओं से किस प्रकार व्यक्त हुई आदि को सविस्तार से काव्य सौन्दर्य के माध्यम से प्रस्तुत कराना	
Learning outcome: विद्यार्थियों को भारतीय कविताओं में चित्रित राष्ट्रीय सांस्कृतिक मूल्यों का ज्ञान मिलेगा अन्य भाषाओं के काव्य सौन्दर्य के आस्वादन के साथ साथ वहां चित्रित राष्ट्र प्रेम ,स्वतंत्रता सेनानियों का विवरण ,काव्य में व्यक्त आधुनिक प्रासंगिकता ,सामाजिक एकता का विवरण जान सकेंगे	
Course Details:	
इकाई 1 : भारतीय कविता में आधुनिकता - भारतीय कविता में आधुनिक प्रवृत्तियों का आरंभ और उसका रूपांतरण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, वैचारिक आन्दोलन, आधार (10L)	
इकाई 2 :- प्रमुख भारतीय कवी 1 - रवीन्द्रनाथ ठाकुर (बांग्ला) (जहाँ चित्त भय-शून्य, शंख, विहंग के जाने का समय हो गया), सुब्रमण्यम भारती (तमिल) (तानाशाह जार का पतन) वैरमुत्तु (भूमि पर आए नव शताब्द हे!) (15L)	

इकाई 3: प्रमुख भारतीय कवि 2 - डॉ. सी. नारायण रेड्डी (तेलुगु) (अमृत बाँट रहा हूँ, मुझे जहर पीने दो), कुसुमाग्रज (मराठी) (पृथ्वी का प्रेमगीत, याचक) (15L)
इकाई 4:- प्रमुख भारतीय कवि 3 - उमाशंकर जोशी (गुजराती) (छोटा मेरा खेत, वर दे इतना), अवतार सिंह संधू 'पाश' (पंजाबी) (कुछ सच्चाईयाँ, हाथ), फैज अहमद फैज- (उर्दू) (मुझसे पहली सी मुहब्बत मेरे महबूब न माँग) (15L)
संदर्भ पुस्तकें :-
1. भारतीय साहित्य: स्थापनाएं और प्रस्तावनाएँ – के. सच्चिदानंद 2. भारतीय साहित्य की भूमिका – डॉ. रामविलास शर्मा 3. भारतीय साहित्य – डॉ. राम छबीला त्रिपाठी

Course code	HIN 563
Course Name:	विश्व साहित्य: सामान्य अध्ययन
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थी को विश्व साहित्य के सम्बन्ध में ध्यान आकर्षित करना है अंग्रेजीके विश्व भाषा बनते ही, ब्रिटेन का साहित्य अधिक पढ़ा जाने लगा तथा विश्व की अन्य भाषाओं के साहित्य की ओर ध्यान कम होता गया इस कोर्स के माध्यम से विश्व की विभिन्न संस्कृति और भाषा के साहित्य का अध्ययन करना और जानकारी प्राप्त करना है साथ ही विश्व के प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं के बारे में अवगत करवाया जायेगा	
Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी समय- समय पर विश्व की बदलती राजनैतिक, आर्थिक स्थितियों और संस्कृति का परिचय प्राप्त करेंगे विभिन्न देशों और भाषाओं के साहित्य से न केवल अवगत होंगे बल्कि उसके सामान्य समाज शास्त्रीय अध्ययन से भी अवगत होंगे इसके साथ ही हिंसी साहित्य की समीक्षा भी कर सकने में अधिक सक्षम होंगे	
Course Details:	
इकाई 1 : विश्व साहित्य की कवितायें वर्ड्सवर्थ (कविता) प्रभात की शोभा, हैं हम अतिशय लिस सदा जग की माया में रिल्के (कविता) मेरे बिना तुम प्रभु ? पतझर की शाम, तमाम दिन आज पाब्लो (कविता) पिता, चिले की पर्वतमाला, कविकर्म, इस्ला नेग्रा की रात	
इकाई 2 :- विश्व साहित्य की कहानियां गोगोल (कहानी) गरम कोट काफ्का (कहानी) कायांतरण लू शुन (कहानी) आ क्यू की सच्ची कहानी	
इकाई 3: विश्व साहित्य के उपन्यास सर्वान्तीज (उपन्यास) दोन की खोते हेमिंग्वे (उपन्यास) सागर और बूढ़ा आदमी	
इकाई 4:- विश्व साहित्य का नाटक बर्तोल्त ब्रेख्त (नाटक) खडिया का घेरा	
संदर्भ पुस्तकें :-	
1. विश्व साहित्य की रूप रेखा , भगवतशरण उपाध्याय, राजपाल एंड संस, दिल्ली 2. विश्व काव्य की रूप रेखा, विजेंद्र स्नातक, अपोलो पब्लिकेशन, जयपुर	

Course code	HIN 564
Course Name:	पटकथा लेखन और फिल्म निर्माण
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0

<p>Course Objectives: फिल्म सम्बन्धी सैध्दांतिक एवं तकनीकी जानकारी दिलाना , शाट ,स्पॉट ,शूट ,स्लॉट ,विभिन्न प्रकार के फिल्म की पारिभाषिक शब्दावलियों का परिचय देकर उन्हें फिल्म सम्बन्धी ज्ञान से अवगत कराना फिल्म के मुख्य कर्मचारी गण,शूटिंग के पूर्व ,दौरान पश्चात होनेवाली प्रक्रियाओं का सैध्दांतिक ज्ञान से अवगत कराना </p>
<p>Learning outcome: फिल्म लेखन के विभिन्न तत्व,फिल्म के प्रकार ,फिल्म निर्माण में होनेवाली समस्त प्रक्रियाओं की विस्तृत जानकारी मिलेगी विभिन्न शॉट्स का परिचय का ज्ञान मिलेगा पटकथा लिखने का कौशल बढेगा विभिन्न परिवेश देकर पटकथा लिखवाकर लेखन की क्षमता को बढाना </p>
<p>Course Details:</p>
<p>इकाई 1 : पटकथा लेखन - पटकथा का स्वरूप, पटकथा के मूलतत्व, पटकथा के प्रकार्य एवं विषयवस्तु – पटकथा का ढ़ंढ (15L) इकाई 2 :- पटकथा प्रगत अध्ययन - कहानी (स्टोरी लाइन), संवाद लेखन, फिल्म रूपांतरण, शूटिंग स्क्रिप्ट (15L) इकाई 3: फिल्म निर्माण - कथा का फिल्मांकन और सम्पादन, कैमरा, उसका महत्त्व और सिनेमा (10L) इकाई 4:- फिल्म पटकथा, साहित्य और संस्कृति - साहित्य और फिल्म का सौन्दर्य बोध, फिल्म में शिल्प एवं अन्य पक्ष (15L)</p>
<p>संदर्भ पुस्तकें :-</p>
<ol style="list-style-type: none"> 1. पटकथा लेखन: एक परिचय, मनोहर श्याम जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2. कथा-पटकथा, मन्नू भंडारी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 3. मीडिया लेखन, सुमित मोहन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

Course code	HIN 565
Course Name:	हिंदी साहित्य और सिनेमा
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
<p>Course Objectives: इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य और सिनेमा से परिचित कराना और उन्हें इस विषय के अध्ययन के लिए प्रेरित करना है इसमें विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य और सिनेमा की जानकारी दी जाएगी, हिंदी सिनेमा के विकास और उसके सौंदर्यशास्त्र से अवगत कराया जाएगा एनिमेशन और डिजिटल सिनेमा और साहित्य के संबंधों के अध्ययन के लिए प्रेरित किया जाएगा </p>	
<p>Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी हिंदी साहित्य और सिनेमा के संबंध से अवगत होंगे किस प्रकार साहित्य का फिल्मांतरण किया जाता है, कैमरे की अनंत संभावनाओं से उसे अविस्मरणीय बनाया जाता है, सिनेमा और साहित्य की केस स्टडी की प्रक्रिया से अवगत होंगे हिंदी सिनेमा के इतिहास की जानकारी प्राप्त होगी समसामयिक विषयों को लेकर सिनेमा समाज के नकारात्मक पक्ष के खिलाफ लड़ता रहा है, सामाजिक समस्याओं का किस प्रकार चित्रण करता है से अवगत होंगे सिनेमा के विविध पहलुओं के साथ ही इस की विस्तृत जानकारी प्राप्त होगी कि सिनेमा मनोरंजन के साथ समाजोपयोगी भी है </p>	
<p>Course Details:</p>	
<p>इकाई 1 : साहित्य और सिनेमा का अंतःसंबंध - हिंदी सिनेमा का विकास, सिनेमा का सौंदर्यशास्त्र (10L) इकाई 2 : सिनेमा के सामाजिक सरोकार - सिनेमा के विविध पहलू-सामाजिक सिनेमा, आंचलिक हिंदी सिनेमा, मुंबइया सिनेमा और समानांतर सिनेमा (15L) इकाई 3: हिंदी की साहित्यिक कृतियों का फिल्मांकन - साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्मों की केस स्टडी - गोदान, शतरंज के खिलाड़ी, तीसरी कसम, आपका बंटी, पहेली आदि (15L) इकाई 4: एनिमेशन और डिजिटल सिनेमा - लोक कथाओं और महाकाव्यों पर आधारित लघु फिल्मों और एनिमेशन, हिंदी सिनेमा का वर्तमान परिप्रेक्ष्य (15L)</p>	
<p>संदर्भ पुस्तकें :-</p>	
<ol style="list-style-type: none"> 1. साहित्य और सिनेमा अंतःसंबंध और रूपांतरण-विपुल कुमार, मनीष पब्लिकेशन, दिल्ली, 2014 2. भारतीय सिने सिद्धांत-अनुपम ओझा, राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली, 2009, 295 रु 	

3. फिल्म निर्देशन-कुलदीप सिन्हा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2007, 400 रु
4. सिनेमा की सोच-अजय ब्रह्मात्मज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, 395 रु
5. सिनेमा समकालीन सिनेमा- अजय ब्रह्मात्मज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, 300 रु
6. सिनेमा के बारे में-जावेद अख्तर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, 175 रु
7. भारतीय फिल्मों की कहानी-बच्चन श्रीवास्तव, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1992
8. सिनेमा: कल, आज, कल- विनोद भरद्वाज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012

Course code	HIN 566
Course Name:	राजस्थान का भक्ति काव्य
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य राजस्थान के भक्ति काव्य, प्रमुख भक्त कवियों और उनके साहित्य से अवगत करवाना है। इन भक्त कवियों ने किस प्रकार आमजन में समन्वय की भावना पैदा कर समाज में जागरूकता पैदा की, इसे अभिव्यक्त करना है। राजस्थान के साहित्य की राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का दिग्दर्शन करवाना है। हिंदी साहित्य के इतिहास, उस काल विशेष के साहित्यकारों, उस काल की प्रवृत्तियों और सीमा ज्ञान से अवगत होना है। साथ ही विद्यार्थी यह भी जान सकेंगे कि जनता की चित्तवृत्तियों में परिवर्तन से साहित्य एवं भाषा में किस प्रकार परिवर्तन होता है।	
Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी इस बात से अवगत हो सकेंगे कि प्रत्येक काल का साहित्य उस युग की चित्तवृत्तियों पर निर्भर करत। विद्यार्थी जान पायेंगे कि राजस्थान के भक्ति साहित्य ने आमजन में फैली रुढ़ियों, जड़मूल परम्पराओं को दरकिनार कर किस प्रकार समतामूलक समाज की स्थापना की। राजस्थान के भक्ति कालीन कवियों की काव्य कला एवं भाषा शिल्प से परिचित हो सकेंगे जो आगामी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक होता है।	
Course Details:	
<p>इकाई 1 : भक्ति अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, भक्ति के विविध भाव, हिंदी साहित्य का पूर्व मध्यकाल, भक्तिकाल के उदय के सामाजिक-आर्थिक कारण, प्रमुख जैन साहित्यकार, जैन साहित्य की प्रवृत्तियाँ, चरितकाव्य, ऋतु काव्य (15L)</p> <p>इकाई 2 : प्रमुख संत कवि - दादूपंथी साहित्यकार, चरणदासी साहित्यकार, रामस्नेही पंथी साहित्यकार, जाम्भोजी, जसनाथी सम्प्रदाय, निरंजन पंथी, लालदासी पंथ प्रमुख कवि एवं प्रवृत्तियाँ (15L)</p> <p>इकाई 3: सगुण एवं निर्गुण सम्प्रदाय, रामभक्ति शाखा :- प्रमुख सम्प्रदाय, गदियाँ और कवि, काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ कृष्णभक्ति शाखा - प्रमुख सम्प्रदाय, गदियाँ और कवि, काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (10L)</p> <p>इकाई 4:- भक्त शिरोमणि मीरां बाई तथा रानाबाई तथा उनके काव्य में प्रतिरोध की चेतना, रहस्यवादी भावना, वेदनानुभूति, प्रेम भावना। (05L)</p>	
संदर्भ पुस्तकें :-	
<ol style="list-style-type: none"> 1. राजस्थान में भक्ति आन्दोलन -प्रो. पेमाराम, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2014, मूल्य 170 रु. 2. राजस्थानी साहित्य का इतिहास -हरदान हर्ष, रचना प्रकाशन, जयपुर, संस्करण, 2015, मूल्य 150 रु. 3. राजस्थान की हिंदी साहित्य को देन -डॉ. गजानन मिश्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, संस्करण, 1995, मूल्य 85 रु. 4. राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा - डॉ. जय सिंह नीरज, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, संस्करण, 2013, मूल्य 105 रु. 5. राजस्थानी भाषा और साहित्य - मोतीलाल मेनारिया, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, संस्करण 2006, मूल्य 250 रु. 6. हिंदी साहित्य इतिहास - रामचंद्र शुक्ल, भारती पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर, दिल्ली, संस्करण 2015, मूल्य 600 7. भारतीय साहित्य का दूसरा इतिहास- बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1997, मूल्य 140 रु. 8. भक्तिकाव्य और लोकजीवन - शिवकुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1983, 250 रु. 	

Course code	HIN 567
Course Name:	21 वीं सदी के राजस्थान के प्रमुख हिंदी नाटक एवं नाटककार
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस पाठ्य क्रम से २१वीं शती के राजस्थान के नाटकों से परिचय प्राप्त कराना , उनमें चित्रित समसामयिक समस्याओं को अवगत कराना साथ में परिवेश की जानकारी देना भाषा शैली से अवगत कराना ,रंगमंचीय दृष्टि से नाटक की सफलता ,पत्रों परियोजना आदि से विषय ज्ञान का बोध कराना	
Learning outcome: विद्यार्थियों को विशेष रूप से राजस्थान के स्थानीय नाटककारों की प्रतिभा की जानकारी मिलेगी नाटक खेलने की रुचि के साथ जिज्ञासा बढ़ेगी राजस्थान की समसामयिक परिस्थितियों का बोध होगा २१वीं सदी के राजस्थान के नाटककारों को साहित्य जगत में विश्व विद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल कराकर उनकी प्रतिभा को उजागर करना समकालीन नाटककारों के लेखन से विद्यार्थी लाभान्वित हो जाये	
Course Details:	
इकाई 1 : २१ वी शती के राजस्थान का नाटक : प्रवृत्तिगत विशेषताएं	
इकाई 2 :- राजस्थान के हिंदी नाटक एवं राजस्थानी नाटक (२१वी सदी के सन्दर्भ में) :	
इकाई 3: २१ वी सदी के प्रमुख नाटककार : एक रचनागत परिचय (चयनित ५ नाटक)	
<ol style="list-style-type: none"> 1. हमीदुल्लाह- खयाल भारमली, दरिंदे, एक और युद्ध 2. नंद किशोर आचार्य- देहांतर, हस्तिनापुर, पागलघर, और गुलाम बादशाह 3. रिजवान जहीर उस्मान - लोमड़ीयां, नमस्कार आज शुक्रवार है, और 'सुनो लड़की दबे पांव आते हैं सभी मौसम' 4. भानु भारती- कथा कही एक जले पेड़ ने, चमकू उर्फ चन्द्रमासिंह और अमरबीज 5. रत्नकुमार साम्भरिया - तीन नाटक: वीमा, उजास, भभुल्या 6. यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र – तास रो घर 7. मणि मधुकर – रस गंधर्व, खेला पालमपुर 8. शिव चंद्र भरतिया – केसर विलास 9. भरत व्यास – रंगीलो मारवाड़, ठोला मारू 10. भगवान अटलानी – पालतू 11. मदन शर्मा – प्रश्न चिह्न 12. रमेश खत्री – मोको कहाँ ढूँढे से बड़े 	
इकाई 4:- २१ वी शती के राजस्थान के नाटक : एक विश्लेषण (चयनित ५ नाटक)	
संदर्भ पुस्तकें :-	
<ol style="list-style-type: none"> 1. नाट्य दर्शन - शांतिगोपाल पुरोहित 2. नाटक और नाट्य शैलियाँ - दुर्गा दीक्षित 3. संस्कृत और हिंदी नाटक - जयकुमार जलज 4. नया नाटक: उद्भव और विकास - डॉ. नरनारायण राय 5. साहित्यलोचन: श्यामसुंदर दास 6. आधुनिक हिंदी नाटक - डॉ. शकुंतला यादव 7. आधुनिक हिंदी नाटक - डॉ. नगेंद्र 8. आधुनिक साहित्य विविध परिदृश्य - सं. डॉ. सुंदरलाल खथूरिया 9. साठोत्तर हिंदी नाटक - के. वी. नारायण कुरूप 	

10. स्वातंत्र्योत्तर नाटक: मूल्य संक्रमण - ज्योतिश्वर मिश्र
11. हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष - गिरीश रस्तोगी
12. मोहन राकेश और उनके नाटक - गिरीश रस्तोगी

Course code	HIN 568
Course Name:	दक्षिण भारत के प्रमुख संत कवि एवं काव्य (तमिल एवं तेलुगु के विशेष सन्दर्भ में)
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: दक्षिण भारत के भक्ति साहित्य की विस्तृत जानकारी के साथ-साथ वहां के प्रमुख भक्ति एवं संत कवियों के साहित्य का ज्ञान अवगत कराना विशेष रूप से तिरुवल्लुवर दोहावली, योगी वेमना के पदों का अध्ययन करवाना, दोनों के काव्य में चित्रित नैतिक, मानवीय मूल्यों को उजागर करवाना भारतीय संत साहित्य हमेशा आधुनिक प्रासंगिक होने के कारण वह समाजोपयोगी भी होगा भाषाओं की एकता राष्ट्रीय एकता की सीढ़ी होती है	
Learning outcome: विद्यार्थियों को दक्षिण भारत के संत काव्य की जानकारी मिलेगी साथ साथ तमिल व तेलुगु क्षेत्रों में प्रचलित संत साहित्य का ज्ञान मिलेगा संत काव्य के अध्ययन से मानवीय मूल्य बढ़कर सभ्य समाज की स्थापना होगी उत्तर के विद्यार्थियों को दक्षिण के संतों के साहित्य की जानकारी मिलेगी जिससे दक्षिण में प्रथम उत्पन्न भक्ति साहित्य के प्रादुर्भाव वहां की साहित्यिक सांस्कृतिक परिवेश के ज्ञान के साथ साथ वहां के कवियों की रचनाओं को हिंदी में अध्ययन करने का सुअवसर मिलेगा	
Course Details:	
इकाई 1 : भारतीय भक्ति साहित्य : एक परिचय (हिंदी ,तेलुगु तमिल के विशेष सन्दर्भ में)	
इकाई 2 :- तमिल के नीति कवि :संत तिरुवल्लुवर : एक परिचय	
इकाई 3: तेलुगु के लोक रंजक क्रांतिकारी संत कवि : योगी वेमना : एक परिचय	
इकाई 4:- वल्लुवर एवं वेमना के चयनित -४० पद (भावार्थ सहित)	
इकाई 5 : हिंदी के संत कवि कबीर दास ,तमिल के तिरुवल्लुवर ,तेलुगु के वेमना : एक तुलना आधुनिक प्रासंगिकता के सन्दर्भ में	
संदर्भ पुस्तकें :-	
Reference Books:	
1. FACTS OF Indian Literature—K.M.George	
2. Glimpses of Indian Culture-Manmohanopaadyay, Dr.Dyanesh Narayani. Chakravarthy	
3. Thirukkural (Tamil) Urai vilakkam-G.Varadarajan	
4. Kural The Great Book-Translated by Sri. C.Rajaji	
5. Vemana padyalu(Telugu) –Bangore T.T.D.Publication Tirupathi.	
6. Ethics, Erotics and Aesthetics – Ed Prafulla, K. Mishra	
7. Kabir Granthavali-Dr.Govind Trigunaayat	
8. Kabir-AAcharya Hajari prasaad Dwivedi.	
9. Vishwa kavi Vemana—Gurram Venkata Reddy, Pochana Vema Reddy.	
10. Hindi-Telugu ek tulnatmak adhyayanamu-aacharya sundara reddy	
11. Natural philosopher-vemana- sri naarla	
12. Kabir-vemana Tulnatmak parisheelanamu (Telugu)– Dr. K.V.V.N. Murthi	

Course code	HIN 569
Course Name:	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता
Credit, Mode:	4, LTP : 4+0+0
Course Objectives: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थी को स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना है। पुराने प्रतिमानों और विचारों की पृष्ठभूमि पर खड़ी कविता नयी अवधारणा को लेकर अपने लक्ष्य को किस तरह और किस तरफ लेकर बढ़ रही है अवगत हो सकेंगे।	
Learning outcome: इस पाठ्यक्रम के समापन के बाद विद्यार्थी इस बात से अवगत हो सकेंगे कि स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता किस तरह जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त करना चाहती है, साथ ही कवि की सजगता तथा विशेष अनुभव काव्य के तथ्य एवं सन्दर्भों के साथ किस प्रकार प्रस्तुत करते हैं। किस प्रकार इस कविता की पृष्ठभूमि एक विशाल रूप धारण कर रही है इस जानकारी से अवगत हो सकेंगे।	
Course Details:	
इकाई 1 : रामधारी सिंह दिनकर – उर्वशी (तृतीय अंक), इकाई 2 :- नागार्जुन -बादल को घिरते देखा है, खुदरे पैर, शासन की बंदूक, मनुष्य हूँ, अज्ञेय- कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला, हरी घास पर क्षण भर, कितनी नावों में कितनी बार, रामकुमार वर्मा -एकलव्य, ओ अहल्या इकाई 3: भवानीप्रसाद मिश्र- सतपुड़ा के जंगल, मुक्तिबोध- भूल गलती, नरेश मेहता - शबरी, जगदीश गुप्त -शम्बूक इकाई 4:- धूमिल – नक्सलवाड़ी, अकाल दर्शन, रोटी और संसद, श्रीकृष्ण सरल - सुभाष चन्द्र (चयनित सर्ग)	
संदर्भ पुस्तकें :-	
<ol style="list-style-type: none"> 1. दिनकर: सृजन और चिंतन, डॉ. रेणु व्यास, सिग्नेचर बुक्स इंटरनेशनल प्रकाशन, दिल्ली, 2013, 510 रु 2. नागार्जुन: अनभिजात का क्लासिक, विजय बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 395 रु 3. नागार्जुन का रचना संसार, विजय बहादुर सिंह, सम्भावना प्रकाशन, हापुड़, 2009, 4. नागार्जुन संवाद, विजय बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, 250 रु 5. मुक्तिबोध रचनावली, (छ: खंड) , राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, 4,200 रु 6. अपने-अपने अज्ञेय, ओम धानवी (सं.) वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2011, 1500 रु 7. आधुनिक कविता का पुनर्पाठ, करुणाशंकर उपाध्याय , राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2008, 400 रु 	